हिंदी 'ब'

प्रतिदर्श प्रश्न-पत्र 6

उत्तरमाला

सी.बी.एस.ई. कक्षा X

खंड 'क' अपठित बोध — 10 अंक

1. (क) मनुष्य जीवन की महानता 'अहं' के संपूर्ण त्याग में है। 'स्व' का त्याग करके ही मनुष्य के व्यक्तित्व की महानता परिलक्षित होती है। **(सी.बी.एस.ई. अंक योजना, 2015) [2]**

व्याख्यात्मक हल: लेखक के अनुसार मनुष्य जीवन की महानता अपना सर्वस्व न्योछावर करने में है। यह इसलिए क्योंकि अपने अहं को पूर्णत: त्याग देना अत्यधिक कष्टसाध्य है। यह मनुष्य तभी कर सकता है जब वह शुद्ध समर्पण के भाव से प्रेरित हो।

(ख) साहित्य के लिए अनुराग/प्रेम रखने वाला। जब साहित्यानुरागी उच्च साहित्य को पढ़कर स्वयं को भूलकर रचना के पात्रों से तादात्म्य स्थापित कर लेता है तब उसे आनंद की प्राप्ति होती है। **(सी.बी.एस.ई. अंक योजना, 2015) [2]**

व्याख्यात्मक हल: 'साहित्यानुरागी' वह होता है जो उच्च सहित्य का रसास्वादन करते समय पात्रों के मनोभावों को अपना बनाकर, उस पात्र में एकाकी होता है। इस प्रकार पात्रों में घुसकर तथा स्वयं के मनोभावों को त्याग कर वह साहित्य का आनंद प्राप्त करता है।

(ग) प्रभु भक्ति की पूँजी 'अलभ्य' बताई गई है। जब भक्त अपने आराध्य देव के चरणों में स्वयं को अर्पित कर प्रभु इच्छा में ही अपनी इच्छा को विलीन कर लेता है। **(सी.बी.एस.ई. अंक योजना, 2015) [2]**

व्याख्यात्मक हल: लेखक का मंतव्य है कि प्रभु-भक्ति की पूँजी अलभ्य है, पर भक्त इस पूँजी को तब प्राप्त कर सकता है जब वह अपना सर्वस्व प्रभु को अर्पित कर दें और पूर्णत: प्रभु की इच्छा में अपनी इच्छा को लय कर देता है।

(घ)
- भौतिक जगत में अपनी क्षुद्रता को समझते हुए अपने अस्तित्व के झूठे अहंकार का त्याग करना मनुष्य के जीवन की चरम उपलब्धि है।
- इससे हम दूसरे से नि:स्वार्थ प्रेम प्राप्त कर सकते हैं। **(सी.बी.एस.ई. अंक योजना, 2015) [2]**

व्याख्यात्मक हल: भौतिक सुखों में लिप्त होने पर भी अपनी क्षुद्रता को समझना और अपने अस्तित्व के झूठे अहंकार को त्याग देना मनुष्य के व्यक्तित्व की चरम उपलब्धि है। यह उपलब्धि प्राप्त करना एक कठिन परीक्षा के समान है। इस कार्य को करना हँसी खेल नहीं है।

(ङ)
- कुछ और प्राप्त करने के लिए स्वयं को भूल जाना विचित्र विरोधाभास है। **[1]**
- क्योंकि यह उपलब्धि के स्तर पर अनिवार्य है। **(सी.बी.एस.ई. अंक योजना, 2015)**

व्याख्यात्मक हल: कुछ और प्राप्त करने के लिए स्वयं को भूल जाना ही 'विचित्र विरोधाभास' है। यह मार्ग सरल अवश्य प्रतीत होता है परंतु इसे अपनाने पर ज्ञात होता है कि यह अत्यंत कठिन मार्ग है।

(च) दूसरे का नि:स्वार्थ प्रेम प्राप्त करने के लिए अपनी इच्छा-आकांक्षाओं और लाभ-हानि को भूल कर उसके प्रति सर्वस्व समर्पण प्राप्त करके ही ऐसा किया जा सकता है। **[1]**

खंड 'ख' व्यावहारिक व्याकरण

16 अंक

2. शब्द जब विभक्तियों से युक्त वाक्य में प्रयुक्त किए जाते हैं, तब पद कहलाते हैं।
उदाहरण-मोहन पुस्तक पढ़ता है। **(सी.बी.एस.ई. अंक योजना, 2016) [1]**

3. **(क)** जब श्याम ने यमुना तट पर मुरली बजाई, तब सारी गायें इकट्ठी हो गई।
(ख) वे वहाँ गए और क्रिकेट का मैच देखने लगे।
(ग) सरल वाक्य। **(सी.बी.एस.ई. अंक योजना, 2016) [3]**

4. **(क)** (*i*) मधुर है जो वचन-कर्मधारय समास
(*ii*) देह का दान-तत्पुरुष समास
(ख) (*i*) प्रकृतिवर्णन-तत्पुरुष समास
(*ii*) गौरवर्ण-कर्मधारय समास **(सी.बी.एस.ई. अंक योजना, 2016) [4]**

5. **(क)** हमने उससे कह दिया था। **[1]**
(ख) तुम अपना पक्ष रखो। **[1]**
(ग) हमारे दोनों लड़के इसी शहर में रहते हैं। **[1]**
(घ) आप हमारे घर कब आएँगे? **(सी.बी.एस.ई. अंक योजना, 2016) [1]**

6. **प्राण हथेली पर रखना**-(अपने प्राणों को संकट में डालना) देश की सीमाओं की रक्षा करने वाले वीर सैनिक अपने प्राण हथेली पर लेकर देश की सुरक्षा करते हैं। **[1]**

घी के दीये जलाना- (खुशी मनाना) श्री राम के वनवास से लौटने पर पूरी अयोध्या नगरी में घी के दीये जलाए गए। **[1]**

चार चाँद लगाना- (प्रतिष्ठा बढ़ाना) - सभासद के आयोजन में आते ही कार्यक्रम में चार चाँद लग गए। **[1]**

तिल का ताड़ बनाना- (बहुत बढ़ा-चढ़ा कर बात करना) रमेश जरा-जरा सी बात पर तिल का ताड़ बना देता है। **[1]**

खंड 'ग' पाठ्यपुस्तक तथा पूरक पाठ्यपुस्तक

28 अंक

7. **(क)** जापानी टी सेरेमनी (चा-नो-यू) में विधिपूर्वक चाय पिलाने वाला
अतिथियों का स्वागत, अँगीठी सुलगाना, तौलिए से बरतन साफ़ करना, चाय बनाना और उसे प्यालों में डालना आदि। **(सी.बी.एस.ई. अंक योजना, 2017) [2]**

व्याख्यात्मक हल: जापानी टी सेरेमनी (चा-नो-यू) में विधिपूर्वक चाय पिलाने वाले को चाज़ीन कहते हैं। चाज़ीन ने अतिथियों का स्वागत किया। उसने कमर झुकाकर प्रणाम किया, बैठने की जगह दिखाई, अँगीठी सुलगाना, तौलिए से बरतन साफ करना, चाय बनाना और उसे प्यालों में डालना आदि क्रियाएँ पूरी कीं।

(ख) काठगोदाम में एक कुत्ता तीन टाँगों के बल रेंगते हुए आया। उसके पीछे-पीछे दौड़ते हुए एक व्यक्ति द्वारा कुत्ते की पिछली टाँग पकड़े जाने के कारण कुत्ता किकियाने लगा। अत: कुत्ते के किकियाने और व्यक्ति की चीख पुकार से भीड़ इकट्ठी हो गई थी। **[2]**

(ग) ततौंरा वामीरो की मृत्यु को त्यागमयी इसलिए कहा गया है क्योंकि उन्होंने सच्चे और गहरे प्रेम के लिए अपने प्राण न्यौछावर कर दिए थे। **[2]**

(घ) धर्म तल्ले के मोड़ पर आकर जूलूस इसलिए टूट गया। क्योंकि सुभाष बाबू को पकड़ कर गाड़ी में बैठाकर लॉकअप में भेज दिया गया। स्त्रियाँ जुलूस बनाकर वहाँ से आगे चली तो बहुत भीड़ एकत्रि हो गई थी। तब पुलिस ने लाठी चार्ज शुरू कर दिया परिणाम स्वरूप 50-60 स्त्रियाँ वहीं बैठ गईं और उन्हें पकड़कर पुलिस लाल बाजार ले गई थी। **[2]**

8. **वजीर अली की विशेषताएँ-**

देशभक्त-अंग्रेजों के प्रति नफ़रत का भाव।
स्वाभिमानी-स्वाभिमान की रक्षा हेतु वकील की हत्या।
जाँबाज सिपाही-मुट्ठीभर सेना के साथ अंग्रेजों से मुकाबला।
निर्भीक एवं निडर-अंग्रेजी खेमें में घुसकर कारतूस ले जाना।
नीतिकुशल-अंग्रेजों के विरुद्ध लड़ने के लिए अफगानिस्तान के बादशाह को निमंत्रण।
(किन्हीं तीन बिंदुओं का विस्तारपूर्वक उल्लेख अपेक्षित।) **(सी.बी.एस.ई. अंक योजना, 2016) [5]**

व्याख्यात्मक हल: वजीर अली एक जाँबाज सिपाही था, उसने अंग्रेजों की ब्रिटिश कंपनी की सैनिक छावनी में निडरतापूर्वक प्रवेश किया और कर्नल से कारतूस प्राप्त किए। वजीर अली एक बलशाली, साहसी, नौजवान था। उसने एक जाँबाज सिपाही की तरह अपने प्राणों की बाजी लगाकर कारतूस प्राप्त किए। उसके जाने के पश्चात कर्नल भी हक्का-बक्का रह गया और उनकी हिम्मत और बहादुरी से अचंभित रह गया। क्योंकि वज़ीर अली उसकी जान बख्श कर चला गया था। वजीर अली अंग्रेजों की हुकूमत को समाप्त करना चाहता था। वज़ीर अली एक नीतिकुशल योद्धा भी था। उसने अंग्रेजों के विरुद्ध लड़ने के लिए अफगानिस्तान के बादशाह शाहजमा को अंग्रेजों पर आक्रमण करने के लिए आमंत्रित किया था।

अथवा

- बीता समय वापस नहीं आता है।
- बीते समय को याद करके दु:खी होना उचित नहीं है।
- भविष्य को हमने देखा नहीं है।
- उसकी कल्पनाओं में खोकर समय नष्ट करना व्यर्थ है।
- वर्तमान ही सत्य है। **(सी.बी.एस.ई. अंक योजना, 2015) [5]**

व्याख्यात्मक हल: लेखक रवींद्र केलकर के अनुसार सत्य केवल वर्तमान है, उसी में जीना चाहिए। लेखक ने बातया कि जब वह जापान में अपने मित्र के साथ 'टी-सेरेमनी' में गया तो चाय की चुस्कियों के मध्य दिमाग की रफ़्तार धीरे-धीरे कम होने पर उसे इस सत्य का अनुभव हुआ। हम सदैव ही बीते हुए दिनों की खट्टी-मीठी यादों में उलझे रहते हैं या भविष्य के रंगीन सपने देखते रहते हैं। हम या तो भूतकाल में रहते है या भविष्यत काल में। वास्तव में, हमारे सामने जो वर्तमान होता है, वही सत्य है। हमें उसी में जीना चाहिए।

9. (क) मैथिलीशरण गुप्त ने निम्नलिखित पंक्तियों में यह व्यक्त किया है कि हमें गर्वरहित जीवन व्यतीत करना चाहिए-

'रहो न भूल के कभी मदांध तुच्छ विप्त में,
सनाथ जान आपको करो न गर्व चित्त में।' **[2]**

(ख) रीतिकाल के कवि बिहारी के दोहों की रचना मुख्यत: प्रेम भक्ति तथा नीति के भावों पर आधारित है। उनका मुख्य ग्रंथ 'बिहारी सतसई' तथा उनकी मुख्य भाषा-'ब्रजभाषा' मैथिली, भोजपुरी, मगही, अंगिका आदि हैं। **[2]**

(ग) तोप युद्ध का तथा चिड़ियाँ मासूमियत का प्रतीक हैं। **[2]**

(घ) 'कर चले हम फिदा' नामक गीत 'हकीकत' फिल्म के लिए लिखा गया था। यह फिल्म 1962 ई. में हुए भारत-चीन युद्ध की ऐतिहासिक पृष्ठ भूमि पर आधारित है। चीन ने तिब्बत की ओर से भारत पर आक्रमण किया। उस युद्ध में भारतीय वीरों ने बहुत कठिन परिस्थितियों में आक्रमण का मुकाबला किया और अपने को बलिदान कर दिया।

11.
- देशभक्ति
- सैनिकों का देश के लिए समर्पण और बलिदान
- देश की रक्षा के लिए भावी सैनिक तैयार करने की भावना
- संगीतात्मकता
- ओजपूर्ण भाषाशैली

(सी.बी.एस.ई. अंक योजना, 2015) [5]

व्याख्यात्मक हल: 'कर चले हम फिदा' नामक कविता पाठक के मन को छू जाती है क्योंकि इसकी विषयवस्तु, देशभक्ति से ओत-प्रोत है। कवि ने प्रस्तुत कविता के माध्यम से सैनिकों द्वारा देश के लिए समर्पण व बलिदान होने की भावना को प्रकट किया है। उक्त कविता देश की रक्षा के लिए भावी सैनिक तैयार करने की भावना को उत्पन्न करती है। उक्त कविता में संगीतात्मकता का गुण है तथा इसकी भाषाशैली ओजपूर्ण है। यह गीत 1962 के भारत-चीन युद्ध की पृष्ठभूमि पर बनी फिल्म 'हकीकत' के लिए लिखा गया था।

अथवा

'पर्वत प्रदेश में पावस' कविता में सुमित्रानंदन पंत ने बताया है कि जब पहाड़ों पर वर्षा ऋतु में बादल बरसते हैं तब पर्वतों से प्रवाहित होने वाले झरने निर्मल पर्वतों का गौरवगान करते हुए पृथ्वी पर झर-झर गिरते हैं और नस-नस में उत्तेजना भर देते हैं। झाग भरे हुए झरते झरने मोती की माला जैसी लड़ियों की तरह सुंदर दिखाई देते हैं और ऐसा प्रतीत होता है जैसे पहाड़ों से चाँदी का भंडार सफेद धातु के रूप में गिर रहा हो। पहाड़ों के हृदय से उठकर ऊँची आकांक्षाओं वाले वृक्ष आकाश की ओर शांत भाव से एकटक देख रहे हैं। इस प्रकार झरने, पर्वत का गौरव-गान कर रहे हैं।

11. (क)
- भिन्न धर्म से आने वाले इ.फ़्फन और टोपी शुक्ला का धर्म से ऊपर उठकर मित्रता करना।
- टोपी शुक्ला का इ.फ़्फन की दादी से गहरा लगाव।
- टोपी शुक्ला और इ.फ़्फन के परिवारों के अलग-अलग परिवेश एवं विरोध के बावजूद दोनों की दोस्ती कायम रहना।
- घरवालों से फटकार मिलने पर टोपी शुक्ला का नौकरानी सीता से सहानुभूति पाना।
- प्रेम किसी बात का पाबंद नहीं होता, इसमें धर्म और जाति बाधा उत्पन्न नहीं कर सकते-लेखक का मानना।

(सी.बी.एस.ई. अंक योजना, 2015) [3]

व्याख्यात्मक हल: इ.फ़्फन और टोपी शुक्ला अलग-अलग धर्म के व्यक्ति थे फिर भी उनमें गहरी मित्रता थी। टोपी शुक्ला जो कि एक हिंदू बच्चा था उसका लगाव एक मुसलमान बच्चे इ.फ़्फन की दादी से था। उन दोनों के ही परिवारों का परिवेश अलग-अलग था फिर भी दोनों में दोस्ती बनी रही। टोपी शुक्ला को घरवालों से डाँट-फटकार मिली परंतु घर की नौकरानी सीता से उसे सहानुभूति प्राप्त हुई। इससे पता चलता है कि प्रेम और मित्रता में किसी भी बात की पाबंदी नहीं होती। उसमें जाति और धर्म किसी भी प्रकार की बाधा उत्पन्न नहीं कर सकते।

(ख)
- परिवार के प्रति विश्वास
- भाइयों तथा बच्चों को अपना समझने की भावना
- समाज में आदर्श स्थिति बनाए रखने के प्रयास

(शेष छात्र का अपना मंतव्य)

(सी.बी.एस.ई. अंक योजना, 2015) [3]

हरिहर काका द्वारा कहे गए उक्त कथन से परिवार के प्रति उनके विश्वास, प्रेम और अपनेपन की भावना परिलक्षित होती है। भाइयों और उनके बच्चों के प्रति लगाव व उन्हें अपना समझने की भावना स्पष्ट

झलकती है। हरिहर काका अपने भाइयों द्वारा दिए गए कष्टों को भुलाकर अपनी पूरी जायदाद उनके नाम करने के बारे में सोचते हैं पर जब महंत उनसे अपनी जायदाद ठाकुरबारी के नाम करने की सलाह मशविरा देते हैं तो हरिहर काका विचार करते हुए इस निष्कर्ष पर पहुँचते हैं कि यदि भाइयों को जायदाद न देकर ठाकुरबारी के नाम जायदाद कर दी तो ये तो भाइयों के साथ धोखा करना होगा। ऐसा करके वह समाज में एक आदर्श प्रस्तुत करना चाहते थे।

खंड 'घ' लेखन

26 अंक

12. (क) एकल परिवार कितना सुविधापूर्ण

संयुक्त परिवार का अर्थ है-अपने कुनवे के साथ इकट्ठे जीवनयापन करना। इसका विलोम है-एकल परिवार, अर्थात पति-पत्नी का अपने अविवाहित बच्चों के साथ जीवनयापन करना। हमारे अतीत ने हमें समूह में रहना सिखाया। हम कबीलों में, कुनबों में और संयुक्त परिवारों में जिए। आज संयुक्त परिवार भी टूट गए हैं। हर आदमी अकेला हो गया है। यह अकेलापन अब प्रश्न खड़े कर रहा है कि हम एकल परिवारों मे जिएँ या फिर से संयुक्त परिवारों में लौट जाएँ।

एकल परिवार की कल्पना मनोरम प्रतीत होती है। वहाँ अवरोध, निर्देश और झंझट कम-से-कम हैं। पति-पत्नी का नवयुगल अपनी सपनों की दुनिया बसाने के लिए स्वतंत्र होता है। न तो वहाँ सास-ससुर का झंझट होता है, न भाई-भतीजों की भीड़। विवाह के पहले-पहले दिनों मे नवयुगल सपनों का सुख अनुभव करता है। परंतु जैसे ही रोज-रोज चूल्हे-चौके की समस्या सताने लगती है, घर-गृहस्थी के सारे भार सिर पर सवार हो जाते हैं। सबसे बड़ी समस्या सुरक्षा की आती है। तब महसूस होता है कि काश! तुम्हारे इर्द-गिर्द एक सुरक्षित संसार होता। सुरक्षित के साथ-साथ अपनों का संसार होता। मनुष्य प्रेम की स्वतंत्रता भी चाहता है किंतु आत्म-विस्तार और सुरक्षा भी चाहता है। प्रेम की स्वतंत्रता एकल परिवार में अधिक है तो आत्म-विस्तार तथा सुरक्षा संयुक्त परिवारों में।

आज महानगरों में अपरिचित लोग रहते हैं। महानगरों का परिचय रेत की महल की भाँति होता है। लोग भीड़ बनाकर तमाशबीन की भाँति खड़े तो हो जाते हैं किंतु वे साथ नहीं होते। शादी-ब्याह के मौके पर वे फूलों का गुच्छा और पैसों से भरा लिफाफा तो ला सकते हैं किंतु समय नहीं दे सकते। दु:ख के अवसर पर भी उनकी सांत्वना बहुत उथली, हल्की और व्यर्थ होती है। तब एहसास होता है कि हमें समझने-जानने वाले हमारे अपने लोगों की क्या कीमत है? तब हम अपने संगी-साथियों में आत्मीयता ढूँढ़ते हैं, किंतु जो हृदय अपने माता-पिता और भाई-बहनों का अपना न हो सका, वह मित्रों-अपरिचितों का अपना कैसे हो? अत: हम धनुष से छूटे हुए तीर की भाँति एकल परिवार की पीड़ा भोगने के लिए अभिशप्त हो जाते हैं। इसी पीड़ा को भोगते हुए कविवर राधेश्याम शुक्ल ने लिखा है-

लौटा ले मेरी सदी, अपने सब त्योहार।
पर मुझसे मत छीन तू, रिश्ते खुशियाँ प्यार।।

एकल परिवारों के कारण बच्चों को न माता-पिता का दुलार मिलता है, न दादा-दादी का लाड़ और न चाचा-बुआ का स्नेह। बड़े बुजुर्ग अपने ही घर में बेगाने, फालतू और लाचार हो जाते हैं। न बच्चे खुश, न बुजुर्ग खुश। खुश होते है केवल युवा दंपत्ति जिन्हें हर प्रकार की छूट मिल जाती है। परंतु मन-ही-मन वे भी अकेलापन और असुरक्षा अनुभव करने लगते हैं। बस 20-25 वर्षो का खेल होता है कि बाद में वे बुजुर्ग होकर अपने बच्चों के लिए तरसते हैं।

आज एकल और संयुक्त परिवार को व्यवस्था में संतुलन बैठाने की आवश्यकता है। अलग-अलग रहने के दु:ख भोगने से अच्छा यही है कि आपसी समझदारी विकसित की जाए। एक-दूसरे की स्वतंत्रता में खलल डाले बिना इकठ्ठे रहा जाए। **[6]**

(ख) प्राकृतिक आपदाः कारण और निवारण

प्राकृतिक आपदा का अर्थ है-प्रकृति की ओर से आए संकट। यह धरती, जिसे मनुष्य अपनी भाषा में आपदा या संकट कहता है, वास्तव में धरती की व्यवस्था है। पहाड़ों का टूटना, समुद्र का अनियंत्रित होना, तूफ़ान आना, बाढ़ें आना, भूकंप आना-ये प्रकृति की अंगड़ाइयाँ हैं। निरंतर घूमती हुई पृथ्वी जब भी करवट लेती है तो बड़े-बड़े भूकंप आते हैं और हमारी बनाई हुई हरी-भरी दुनिया को उजाड़ देती है। वास्तव में, पृथ्वी पर हुए निर्माण और विनाश उसकी स्वाभाविक लीलाएँ हैं। हमें उन लीलाओं के समक्ष सिर झुकाकर ही चलना चाहिए। ऐसा दिन कभी नहीं आएगा, जब कि मानव सारे प्राकृतिक संकटों पर काबू पा लेगा।

कुछ दिनों पहले भारत के उत्तराखंड में जलप्रलय आया। पहाड़ों पर बादल फटे। घनघोर बारिश हुई। 16 जून रात सवा आठ बजे और 17 जून सुबह 6 बजे ऐसे दो सैलाब आए कि भारत के करीब एक लाख पर्यटक पहाड़ों में फँस गए। जो जहाँ था, वहीं जलप्रलय का शिकार हो गया। किसी की कार-बस में कीचड़ घुस आया, किसी का वाहन जल के वेग में बह गया। कोई होटल या धर्मशाला में बैठे-बैठे उस सैलाब में बह गया। उस होटल में ही उसकी जल-समाधि हो गई। आज तक पता नहीं चला कि वे नदी में बहते हुए मकान से बाहर भी निकल सके या मकान समेत बाढ़ में बह गए। किसी के ऊपर चट्टान आ गिरी तो किसी के पाँव के नीचे से धरती खिसक गई। हजारों यात्री तत्काल काल की भेंट चढ़ गए।

इस भयंकर जल-सैलाब को लेकर देशभर में चर्चा शुरू हो गई कि इस प्राकृतिक आपदा का मूल कारण क्या है। पर्यावरण के जानकार कहते हैं कि हमने अपनी अंधाधुंध प्रगति की चाह में जिस प्रकार पहाड़ों को काटा है, उनकी छाती में सुरंगें बनाई हैं, बारूद लगाकर विस्फोट किए हैं, उन पर चलने के लिए सड़कें बनाई हैं, उससे पहाड़ों में खलबली मच गई। भू-स्खलन आम हो गए हैं। पहाड़ों पर सदियों से जमे हुए पत्थर, पेड़ और मिट्टी अपनी जड़ों से उखड़ गई है। इस कारण कोई भी प्राकृतिक तूफ़ान आता है तो भयंकर विनाश छा जाता है। यह सब मानव की करतूत है। हम प्रकृति को छेड़ेंगे तो प्रकृति अपने हिसाब से हमसे बदला लेगी। पहाड़ों पर बनाए जाने वाले बाँध तो बहुत बड़ा खतरा हैं।

प्रश्न यह है कि क्या मनुष्य को इन प्राकृतिक आपदाओं से मुक्ति मिल सकती है। इसका हल है-नहीं। वह दिन कभी नहीं आने वाला जबकि हम सभी प्राकृतिक आपदाओं से मुक्त हो जाएँगे। परंतु हमारी समझ में प्राकृतिक छेड़छाड़ के जो-जो कारण हमें हानि पहुँचा रहे हैं, हम उन पर नियंत्रण कर सकते हैं। गांधी जी ने कहा था कि- ''यह प्रकृति करोड़ों क्या अरबों-अरबों लोगों का पालन कर सकती है किंतु एक भी इनसान की तृष्णा पूरी नहीं कर सकती।''

आपदाएँ कभी समय देकर नहीं आतीं। वे बिना बताए कभी भी, कहीं भी आ सकती हैं इसलिए हमें सभी जगह आपदा प्रबंधन के उपाय सँवारकर रखने होंगे, तभी हम मौत के किसी भी जलजले से बच सकेंगे। **[6]**

(ग) दैनिक जीवन में विज्ञान

विज्ञान के विकास से जन-जीवन में क्रांति आ गई है। विज्ञान ने बड़े-बड़े उद्योगों को जन्म दिया है। यातायात, संचार और श्रम के क्षेत्र में अभूतपूर्व सुविधाएँ प्रदान की हैं। वैज्ञानिक साधनों के कारण आज पूरा विश्व कुटुंब की भाँति बन गया है। विश्व की कोई भी घटना मिनटों-सेकेंडों में विश्वभर में फैल जाती है। दूरदर्शन, रेडियो, दूरभाष, इंटरनेट और उपग्रह-संचार से सारा विश्व मानो जुड़ गया है।

आज से कुछ वर्ष पहले बिजली का आविष्कार नहीं हुआ था। तब न स्वचालित मशीनें थीं, न रातें प्रकाशमान थीं। नगर और ग्राम संध्या होते ही अँधेरे से घिर जाते थे। आज हमारी रातें रोशन हैं। दिन मे ही नहीं, रात में भी रोशनियाँ जगमगाती हैं। कारखाने दिन-रात उत्पाद उगलते हैं। मनुष्य की क्षमता कितनी बढ़ गई है।

विज्ञान के कारण हमने अनेक बीमारियों पर विजय पा ली है। मृत्यु-दर को काफी कम कर दिया है। जीवन का स्तर सुधार लिया है। बाढ़, सूखा, महामारी जैसी प्राकृतिक विपदाओं पर भी काफी मात्रा में नियंत्रण पा लिया है। पोलियो, मलेरिया, चेचक जैसी अनेक बीमारियों के विरुद्ध अभियान छेड़कर जनजीवन को सुरक्षित बनाने के प्रयास जारी हैं।

विज्ञान व्यक्ति के चिंतन पर भी प्रभाव डालता है। वह तथ्यों को महत्व देता है। इसका लाभ यह है कि मनुष्य अपनी रूढ़ियों के जंजाल से मुक्त होता है। उसकी कपोल-कल्पनाएँ नष्ट होती हैं। जिन धारणाओं के कारण उसका जीवन नष्ट होता था, उनसे उसे मुक्ति मिलती है।

विज्ञान सत्य की खोज का सबसे सशक्त साधन है। एक उदाहरण पर्याप्त है। क्रिकेट के मैच में लेग-अंपायर संदिग्ध कैच और रन-आउट के सूक्ष्म अंतर को पकड़ने में गलतियाँ कर जाता था। अत: उसकी छोटी-सी गलती किसी भी टीम या खिलाड़ी का मनोबल तोड़ देती थी। परंतु आज मशीन की सहायता से ये गलती टल जाती है। इसी प्रकार विज्ञान अनेक रोगों की सही पहचान करके हमें अनेक बीमारियों से बचा लेता है। सचमुच विज्ञान वरदान है। **[6]**

13. सेवा में,

अध्यक्ष,

बिहार परिवहन निगम,

मुजफ्फरपुर।

विषय-'नया बाजार तक बस सेवा आरंभ कराने हेतु'

महोदय,

निवेदन है कि पटवा टोली, नया बाजार के हम निवासी परिवहन निगम की बस सेवा के अभाव में परेशान हैं। हमें रोज बस अड्डे तक जाने के लिए वाहन या रिक्शा आदि का सहारा लेना पड़ता है। यहाँ से सैकड़ों कर्मचारी दैनिक बस अड्डे तथा रेलवे स्टेशन तक जाते हैं। आपसे निवेदन है कि नया बाज़ार तक भी एक बस सेवा आरंभ करें। इससे आम आदमी को काफी सुविधा होगी।

धन्यवाद!

भवदीय

कृष्णदेव **[5]**

अथवा

सेवा में,

विद्युत अधिकारी।

डिब्रूगढ़।

महोदय,

मैं आपका ध्यान बिजली संकट की ओर दिलाना चाहता हूँ। पिछले छ: मास से इस नगर की विद्युत व्यवस्था खंडित हो गई है। जब चाहे, बिजली चली जाती है और घंटों-घंटों नहीं आती है।

महोदय मैं एक विद्यार्थी हूँ। मेरे जैसे अन्य विद्यार्थी भी बिजली गुल होने के कारण बेहद तनाव में हैं। यदि ऐसा चलता रहा तो हमारा भविष्य चौपट हो जाएगा। कृपया आप कुछ कीजिए जिससे हमें नियमित बिजली मिलती रहे।

भवदीय!

गीतांश

14.

आवश्यक सूचना

विद्यालय के समस्त छात्र छात्राओं को सूचित किया जाता है कि विद्यालय के पुस्तक-कोष में निर्धन बच्चों के लिए पुरानी पाठ्य पुस्तकों को प्रदान करने की व्यवस्था की गई है अत: आप सभी से अनुरोध है कि आप सब भी अपनी पुरानी-पुस्तकें, पुस्तक-कोष में जमा कर इस नेक कार्य में अपना योगदान करें।

आज्ञा से

डा. रमेश सिंह

प्रधानाचार्य

[5]

अथवा

सूचना

डी.ए.वी. पब्लिक स्कूल, फरीदाबाद

दिनांक.....

सभी को यह सूचित किया जाता है कि 23 मार्च 20** को विद्यालय परिसर में मुझे एक बटुआ मिला है, जिसमें कुछ रुपये और जरूरी कार्ड भी हैं। जिस किसी का भी यह बटुआ है वह प्रधानाचार्य के कक्ष से उसे प्राप्त कर ले, क्योंकि उसे प्रधानाचार्य के पास जमा करा दिया गया है।

'रश्मि गौतम'

क्रमांक-11

कक्षा-9 'सी'

15. पिता-पुत्र के मध्य संवाद

पिता – बेटा, मोहित मैं आज तुम्हारे विद्यालय गया था।

पुत्र – क्यों पिता जी?

पिता – आपके कक्षाध्यापक ने बुलाया था, वह आपकी शिकायत कर रहे थे।

पुत्र – क्या कहा उन्होंने?

पिता – आपके कक्षाध्यापक ने बताया कि आप अपना गृहकार्य पूरा नहीं करते।

पुत्र – करता तो हूँ।

पिता – अब तुम टी. वी. देखने और खेलने पर कम ध्यान दो, अपना पूरा ध्यान पढ़ाई पर लगाओ।

पुत्र – ठीक है पिताजी, अब मैं अपना गृहकार्य समय से पूरा करूँगा, पढ़ाई भी मन लगाकर करूँगा।

पिता – अब मुझे आगे से शिकायत नहीं मिलनी चाहिए।

पुत्र – ठीक है पिता जी, अब ऐसा नहीं होगा। **[5]**

अथवा

दो मित्रों के बीच संवाद

महेश – रमेश, मुझे तो समझ में ही नहीं आ रहा है कि कैसे पढ़ूँ, अगला पढ़ता हूँ, पिछला भूलने लगता हूँ।

रमेश – मित्र, निराश मत हो, कभी-कभी ऐसा लगता है कि हम पिछला पढ़ा हुआ भूल रहे है, पर सिर्फ़ दोहराते रहने की जरूरत होती है।

महेश – मित्र यदि मैं पिछला ही दोहराता रहूँगा तो आगे कैसे बढ़ूँगा।

रमेश – मित्र मेरी बात ध्यान से सुनो, जब तुम पढ़ने बैठो तो शुरू से दस-पंद्रह मिनट पिछले पढ़े हुए पर नजर डाल लिया करो।

महेश – रमेश ये बताओ! क्या तुम सभी विषयों को समय दे पाते हो?

रमेश – हाँ, कभी-कभी मुश्किल लगता है तो अपने खेल व आराम करने के समय को पढ़ाई के साथ जोड़ देता हूँ। आज का काम कल पर नहीं टालता हूँ।

महेश – मित्र, आज मुझे तुमसे बहुत अच्छी बातें सीखने को मिलीं। धन्यवाद!

16.

वाहन बिक्री

बिकाऊ है:- एक सेंट्रो पुरानी कार

मॉडल नंबर UP90BF 20×× चलती हुई कंडीशन में

रंग-सफेद

पंजीकरण-यू.पी

कीमत मात्र- ₹1,80,000

मौके का लाभ उठाएँ-इच्छुक खरीददार तुरंत संपर्क करें-डॉ. प्रदीप चौहान, बोदला, आगरा

फोन नं-94083411××

[5]

अथवा

नटराज नृत्य प्रशिक्षण केंद्र

सभी प्रकार की नृत्य कलाओं (लोकनृत्य, सांस्कृतिक, पाश्चात्य आदि) के प्रशिक्षण हेतु विशिष्ट प्रशिक्षित प्रशिक्षिकों की व्यवस्था है। अपने अनुसार समय व दिन का चयन कर सामान्य शुल्क में उत्तम नृत्य-कला सीखें।

संपर्क करें - 9410234541

● ●

हिंदी 'ब'

प्रतिदर्श प्रश्न-पत्र

उत्तरमाला

7

सी.बी.एस.ई, कक्षा X

खंड 'क' अपठित बोध

10 अंक

1. (क)
- बाल काटना और हज़ामत बनाना
- वह उसी कौशल से बालों का मिलान करता है जैसे कोई इंजीनियर पुल के खंभों का मिलान करता है।

(सी.बी.एस.ई. अंक योजना, 2017) [2]

व्याख्यात्मक हल: ज़फ़र का व्यवसाय है बाल काटना और हज़ामत बनाना। ज़फ़र के व्यवसाय की तुलना एक इंजीनियर से इसलिए की गई है क्योंकि ज़फ़र भी उसी कार्यकुशलता के साथ बालों का मिलान करता है जिस कुशलता से एक इंजीनियर पुल के खंभों का मिलान करता है।

(ख)
- कुशलता और तल्लीनता से बाल काटना
- एक-एक बाल पर एक-एक ढलाव पर और एक-एक मिलान पर ध्यान रखना

(सी.बी.एस.ई. अंक योजना, 2016) [2]

व्याख्यात्मक हल: ज़फ़र अपना कार्य अर्थात बाल काटने का कार्य बड़ी ही कुशलता और तल्लीनता के साथ करता है। वह बालों की कटिंग करते समय एक-एक बाल व एक-एक ढलाव पर तथा एक-एक मिलान पर ध्यान रखता है।

(ग)
- तल्लीनता के कार्य करते हुए यह देखना कि कहीं कोई कील तो नहीं रह गई।
- सीधे और उलटे का ध्यान रखना
- कलम से लेकर मूँछों की छँटाई तक में सौंदर्य का ध्यान रखना

(किन्हीं दो बिंदुओं का उल्लेख अपेक्षित) **(सी.बी.एस.ई. अंक योजना, 2017) [2]**

व्याख्यात्मक हल: हज़ामत बनाते समय जफ़र बड़ी ही तल्लीनता से अपना कार्य करते हुए देख रहे थे कि कहीं कोई कील तो नहीं रह गई। कभी वे अपना एक सीधा हाथ उठाते तो कभी उल्टा। कलम से लेकर मूँछों की छँटाई तक का कार्य उन्होंने (ज़फ़र) तल्लीनता और सुंदरता के साथ किया।

(घ)
- मज़दूर को कलक्टर कहकर ज़फ़र को ताना देना
- एक सामान्य मज़दूर को महत्व और सम्मान देना
- समाज पर व्यंग्य, लोग स्वार्थवश बड़े और धनी लोगों की चापलूसी करते हैं।

(सी.बी.एस.ई. अंक योजना, 2017) [2]

व्याख्यात्मक हल: प्रस्तुत कथन में मज़दूर को कलक्टर कहकर ज़फ़र को ताना दिया जा रहा है। ज़फ़र एक सामान्य मज़दूर को भी सम्मान व महत्व दे रहे हैं क्योंकि सामान्यत: लोग स्वार्थवश बड़े और धनी

लोगों की चापलूसी करते हैं और उन्हीं का सम्मान करते हैं उक्त कथन द्वारा समाज के स्वार्थी लोगों पर व्यंग्य किया गया है।

(ङ)
- कार्य के प्रति समर्पण की भावना
- प्रत्येक ग्राहक का अत्यंत महत्वपूर्ण होना **(सी.बी.एस.ई. अंक योजना, 2017) [1]**

व्याख्यात्मक हल: ज़फ़र द्वारा दिए गए उत्तर में ज़फ़र की कार्य के प्रति समर्पण की भावना तथा उसके लिए प्रत्येक ग्राहक अत्यंत महत्वपूर्ण है। इस भाव की मिठास के कारण ही लेखक ज़फ़र पर मुग्ध हो गया।

(च) लेखक बीस मिनट से ज्यादा जफ़र की तल्लीनता को देखता रहा कि जफ़र उस मजदूर के बालों की कटिंग में लीन थे। **[1]**

खंड 'ख' व्यावहारिक व्याकरण 16

2. ध्वनियों की स्वतंत्र, सार्थक इकाई शब्द कहलाती है और जब शब्द व्याकरणिक नियमों में बँधकर वाक्य में प्रयुक्त किया जाता है तब वह पद बन जाता है।
जैसे- स्वतंत्रता - शब्द
हमें <u>स्वतंत्रता का</u> मान रखना चाहिए।- पद **(सी.बी.एस.ई. अंक योजना, 2016) [1]**

3. (क) मिश्र वाक्य **[1]**

(ख) वह लोकप्रिय है / था इसलिए उसका ज़ोरदार स्वागत हुआ। **[1]**

(ग) वे बाज़ार जाकर सब्ज़ी ले आए। **(सी.बी.एस.ई. अंक योजना, 2015) [1]**

4. (क) **(i)** हाथी और घोड़े / हाथी या घोड़े - द्वंद्व समास **[1]**

(ii) पीला है अंबर जिसका अर्थात श्री कृष्ण - बहुब्रीहि / पीला है अंबर जो - कर्मधारय **[1]**

(ख) **(i)** घनश्याम- कर्मधारय **[1]**

(ii) देशवासी- तत्पुरुष **(सी.बी.एस.ई. अंक योजना, 2015) [1]**

5. (क) सोने का एक हार ले आओ। **[1]**

(ख) आज का अवकाश देने की कृपा करें। / कृपया आज का अवकाश दें। **[1]**

(ग) मुझे एक हजार रुपए चाहिए। **[1]**

(घ) क्या उसने देख लिया है? क्या उसे देख लिया है? **(सी.बी.एस.ई. अंक योजना, 2015) [1]**

6. काम तमाम कर देना - (खत्म कर देना) **[1]**
पांडवों ने कौरवों का काम तमाम कर दिया।
हक्का-बक्का रह जाना - (आश्चर्य चकित रह जाना) **[1]**
विदेशी पर्यटक ताजमहल की सुंदरता को देखकर हक्का-बक्का रह जाते हैं।
अंगूठा दिखाना - (साफ इंकार कर देना)
जब मैंने सेठ जी से सहायता माँगी तो उन्होने मुझे अंगूठा दिखा दिया। **[1]**
अक्ल का दुश्मन - (मूर्ख)
अतुल को बार-बार बताने पर भी वह कोई काम ठीक से नहीं करता वह तो अक्ल का दुश्मन है। **[1]**

खंड 'ग' पाठ्यपुस्तक तथा पूरक पाठ्यपुस्तक 28 अंक

7. (क) लेखक के बड़े भाई अपने अज्ञान और अयोग्यता के कारण पढ़ाई से डरे हुए हैं। उन्हें लगता है कि इतनी मेहनत के बाद भी जब वे फेल हो गए तो ये पढ़ाई जरूर ही बहुत ही कठिन होगी। इसीलिए वह लेखक को उम्र भर एक दरजे में पड़े रहने का डर दिखाता है। **[2]**

(ख) अविनाश बाबू बंगाल प्रांतीय विद्यार्थी संघ के मंत्री थे। अविनाश बाबू के द्वारा झंडा गाड़ने पर पुलिस ने उन्हें पकड़ लिया था तथा अन्य लोगों को मार-पीटकर इधर-उधर हटा दिया था। **[2]**

(ग) धरती फाड़कर उसमें तताँरा के समा जाने के बाद वामीरों की दशा पागलों के सदृश्य हो गई। वामीरों ने खाना-पीना भी छोड़ दिया। **[1]**

(घ) प्रकृति में आए असंतुलन का परिणाम यह हुआ कि अब गरमी में ज्यादा गरमी पड़ने लगी, बेबक्त की बरसातें होने लगीं/जलजले, सैलाव और तूफान उठने लगे हैं। परिणामस्वरूप नए-नए रोगों का जन्म हो गया है। **[2]**

8. जापानी लोगों के जीवन की गति बहुत ही तेज हो गई है। जापानी लोग सामान्य तरीकों से गरिमापूर्वक चलने की बजाय, बेतहाशा भागते हैं ताकि अधिक से अधिक काम कर सकें। वे स्वाभाविक रूप से बातचीत करने की बजाए आवेश में आकर बकते है, उनके पास शांत और स्वाभाविक रूप से बात करने का समय नहीं होता, वे (जापानी) लोग अकेले में भी शांत नहीं होते, उनके जीवन में कुंठा, संत्राश, निराशा जैसे भाव उन्हें हिलाकर रख देते हैं, इसीलिए वे एकांत में भी बड़बड़ाते रहते है अर्थात जापानी लोग तनाव से भरपूर जीवन जीते हैं। **[5]**

अथवा

बढ़ती हुई आबादी के परिणामस्वरूप प्राकृतिक संतुलन बिगड़ता जा रहा है। पेड़ों और पौधों के काटे जाने के कारण जीव-जंतुओं से उनके आवास (घर) छिन गए हैं। उनमें से कुछ जीव-जंतुओं की प्रजातियाँ विलुप्त हो रही हैं तो कुछ अपने निवास स्थान को बदलकर कहीं और चले गए हैं। आवास बढ़ने से समुद्र का स्वरूप सिकुड़ता जा रहा है। इस प्रकार प्रकृति में असंतुलन होने से विभिन्न प्राकृतिक आपदाओं जैसे- तूफान, बाढ़, जलजला, बेवक्त बरसात, ज़्यादा गर्मी पड़ना, नित नए रोग व बाढ़ का प्रकोप झेलना पड़ रहा है।

9. (क) मीठी वाणी बोलने से औरों को सुख और अपने तन को शीतलता प्राप्त होती है क्योंकि मीठी वाणी सुनने में मधुर होती है जिसे सुनकर हमारा तन और मन प्रसन्न होता है उसका प्रभाव व्यक्ति को संतोष एवं शक्ति प्रदान करता है। मीठी वाणी से सामने वाले व्यक्ति को प्रभावित करके असंभव कार्य को भी संभव किया जाता है। **[2]**

(ख)
- झरना
- अपनी आवाज और गति **(सी.बी.एस.ई. अंक योजना, 2016) [2]**

व्याख्यात्मक हलः 'पर्वत प्रदेश में पावस' कविता में कवि ने बताया है कि जब पहाड़ों पर वर्षा ऋतु में बादल बरसते हैं तब पर्वतों से प्रवाहित होने वाले झरने गिरि का गौरव गाते हुए पृथ्वी पर गिरते हैं और अपनी आवाज और गति से नस-नस में उत्तेजना का संचार कर पाते हैं।

(ग) 'मुँह बंद होना' मुहावरे का 'तोप' कविता में कवि ने लाक्षणिक अर्थ बताते हुए कहा है कि तोप का आग उगलने वाला मुँह अब हमेशा के लिए बंद हो गया है। **[2]**

(घ) चाकरी से मीरा को कृष्ण दर्शन का लाभ मिलेगा। वह नित्य श्री कृष्ण के दर्शन कर सकेंगी और वृन्दावन की कुंज गली में गोविन्द की लीलाओं को गा सकेगी। जिससे उसको भक्तिभाव का साम्राज्य प्राप्त हो जाएगा। **[2]**

10. 'तोप' नामक उक्त कविता से हमें तोप के विषय में निम्नलिखित जानकारी मिलती है-

(अ) तोप के समग्र इतिहास के विषय में जो कि 1857 की है।

(ब) तोप पर्यटकों को सुबह-शाम एक प्रतीक के रूप में अपने कार्यो का बख़ान करती है।

(स) तोप विरासत से प्राप्त हुई है, जिसे भली-भाँति सँभाल कर रखा गया है।

(द) समय बदलने पर तोप में हो रहे परिवर्तन का भी वर्णन किया गया है।

(य) बच्चों द्वारा तोप का उपयोग घुड़सवारी, चिड़ियों द्वारा बैठकर गप-शप करने, गौरइया द्वारा तोप के अंदर शैतानी करते हुए प्रवेश करना। **[5]**

अथवा

कवि के अनुसार जो व्यक्ति स्वार्थपूर्ण जीवन व्यतीत करता हुआ, अंत में मृत्यु को प्राप्त हो जाता है, ऐसे मनुष्य का जीवन और मरण दोनों वृथा हैं। मनुष्य को चाहिए कि अपनी बौद्धिक शक्ति और संवेदनशीलता

के द्वारा सृजनात्मक एवं अविस्मरणीय कार्य करने में ही जीवन की सार्थकता समझे किंतु यदि मनुष्य का जीवन समाप्त होने के साथ ही लोग उसे भूल जाएँ तो उसका जीवन और मरण दोनों वृथा हैं।

11. (क) बुजुर्ग हम सभी की विरासत और धरोहर होते हैं। उनके पास अनुभव से प्राप्त ज्ञान होता है, वे नई-नई बातें हमें सिखाते हैं, वे हमें मूल्यपरक बातें सिखाते हैं, हमारे नैतिक व चारित्रिक बल को ऊँचा उठाने की कोशिश भी करते है। जब टोपी इफ़्फन के घर जाता है तो कई बार उसकी अम्मी और बाजी उसका मज़ाक उड़ातीं तब इफ्फन की दादी ही उसका बीच बचाव करती थीं। टोपी को दादी से बहुत अपनापन मिलता था। हम सभी अपने घर में रहने वाले बुजुर्गो की देखभाल करेंगे तथा उनका ध्यान रखते हुए उनकी सेवा भी करेंगे। **[3]**

(ख) हरिहर काका के मामले में गाँव वालों की राय तीन भागों में बँटी हुई थी- पहला वर्ग यह चाहता था कि हरिहर काका अपनी जमीन महंत के नाम कर दें, दूसरा वर्ग उनके भाई के नाम करना चाहता था और तीसरा वर्ग चाहता था कि हरिहर काका अपनी जमीन बेच कर सामाजिक कार्यों में लगा दें। **[3]**

खंड 'घ' लेखन

26 अंक

12. (क) ग्लोबल वार्मिंग

धरती जीवनदायिनी है। चंद्र-मंगल आदि ग्रहों पर जीवन नहीं है। इसका कारण है- पर्यावरण या वातावरण। धरती पर जलवायु ऐसी है कि इस पर वनस्पति पैदा हो सकी, जल के स्रोत बन सके और जीव पैदा हो सका। यह जीवन-लीला तभी चल सकती है जबकि यहाँ का प्राकृतिक वातावरण निर्दोष बना रह सके।

दुर्भाग्य से आज पर्यावरण का यह संतुलन टूट गया है। जीवन जीने के लिए जितना ताप चाहिए, जितना जल चाहिए, जितने वृक्ष-जंगल चाहिए। जितनी बर्फ, जितने ग्लेशियर और नदियाँ चाहिए, उन सबमें खलल पड़ गया है। धरती पर जितने हिमखंड चाहिए और जितना समुद्री जल चाहिए, उसका संतुलन बिगड़ गया है। चौंकांने वाली बात यह है कि आज हर रोज़ एकड़ों जमीन समुद्र में समाती जा रही है। उत्तरी तथा दक्षिणी ध्रुव के बर्फीले पहाड़ पिघल-पिघल कर समुद्र में मिलते जा रहे हैं। इसके कारण समुद्र का जल बढ़ता जा रहा है। भय है कि आने वाले 30-40 सालों में चेन्नई, मुंबई आदि के समुद्र-तट अपने किनारे बसे नगरों को लील जाएँगे। जैसे भगवान कृष्ण की द्वारिका नगरी समुद्र में समा गई थी, वैसे ही एक दिन सारी धरती जलमग्न हो जाएगी। यह संसार जल-प्रलय में डूब जाएगा। जो जल जीवन देता है वही एक दिन जीवन को नष्ट कर देगा।

जल की इस विनाशलीला का कारण है- पर्यावरण में बढ़ता हुआ ताप। जितनी मात्रा में हम फ्रिज, ए.सी., परमाणु भट्टियाँ या कार्बन छोड़ने वाले रसायनों का उपयोग कर रहे हैं; वातावरण में डीज़ल-तेल या खतरनाक रसायनों को जला रहे हैं साथ ही नमी पैदा करने वाले जंगलों और वनस्पतियों को काट रहे हैं, उससे गर्मी भीषण रूप से बढ़ रही है। पूरे वायुमंडल में गर्मी का एक गुब्बार-सा छा गया है। परिणामस्वरूप हमारे पर्यावरण पर कवच की तरह जमी ओजोन गैस की परत में छेद हो गया है। इससे सूर्य की विषैली किरणें तरह-तरह के रोग पैदा कर रही हैं। आज मनुष्य के लिए खुली हवा और धूप में निकलना भी दूभर हो गया है।

इस ताप को बढ़ाने में आज का मनुष्य दोषी है। वह सुख-सुविधा के मोह में अपनी मौत का सामान इकट्ठा कर रहा है। इसलिए कवि ने लिखा है-

ओ मनुज! गर ताप को तू यों बढ़ाता जाएगा।
मत समझ यह जग जलेगा, तू भी न बच पाएगा।
आज जिस धरती को तूने है बनाया आग-सा।
तू झुलस कर खुद इसी में एक दिन मर जाएगा। *अशोक बत्रा*

धरती को ताप से बचाने का एक ही उपाय है- अपने पापों का प्रायश्चित करना। जिन-जिन कारणों से हमने ताप बढ़ाया है, कष्ट उठाकर भी उन कारणों को बढ़ने से रोकना जैसे - पौधे लगाना, हरियाली उगाना। मशीनी जीवन की बजाय प्रकृति की गोद में लौटना। **[6]**

(ख) बाल श्रमिक

बाल श्रमिक का प्रचलित नाम है- बाल मज़दूर। मज़दूर का नाम सुनते ही हमारे सामने किसी कठोर काम में लगे रूखे-सूखे फटेहाल आदमी का चेहरा आ जाता है। दूसरी ओर किसी बालक का नाम सुनते ही किसी कोमल मासूम बच्चे का रूप सामने आ जाता है। यही परस्पर विरोधी रूप हमारे मन में करुणा पैदा करता है। एक कोमल बच्चे को घोर मेहनत करते देखकर हमारा हृदय पसीज उठता है। किसी बच्चे का होटल पर दिन-रात बर्तन माँजना, अँगीठी सुलगाना, ग्राहकों की सेवा करना, छोटी बच्चियों का घरों में सफाई करना या फिर अपने माता-पिता के साथ ईंटें ढोना बड़े मार्मिक दृश्य हैं। यह मानों बच्चों का बचपन छीनना है जो कि मानवता के प्रति अपराध है।

कभी एक बाल-मज़दूर की दिनचर्या देखिए। उसे माता-पिता या मालिक की झिड़कियाँ बिस्तर से उठाती हैं। उठते ही उस पर काम पर जाने का तनाव हावी हो जाता है। होना यह चाहिए कि उसके माता-पिता उसे बड़े लाड़-प्यार से उठाएँ, उसे स्कूल के लिए तैयार करें, उसे गर्म-गर्म नाश्ता मिले। वह प्यार-दुलार पाकर जीवन में आगे बढ़ने के लिए उत्साहित हो। परंतु उस पर सवार हो जाती हैं घर चलाने की जिम्मेदारियाँ। काम पर पहुँचने पर भी उसका वहाँ पर स्वागत नहीं होता। मालिक लोग उससे बड़ी बेरहमी से पेश आते हैं। उसे बात-बात पर अपमानित किया जाता है। जो काम बड़े प्यार से लिया जा सकता है, उसे डाँट-डपट से लिया जाता है। मालिक बाल-मज़दूरों पर मनमाने अत्याचार करते हैं। उनसे देर रात तक काम लिया जाता है। उन्हें दोपहर में आराम की सुविधा नहीं दी जाती। यदि बाल मज़दूर काम करने में न-नुकर करे तो उसे बुरी तरह पीटा जाता है। बेचारा मासूम बालक मन मसोस कर रह जाता है।

लज्जा की बात यह है कि बड़े-बड़े व्यवसायी से लेकर छोटे दुकानदार और उद्योगपति सभी उसका जबरदस्त शोषण करते हैं। उनके अपने बच्चे आराम की ज़िंदगी जीते हैं, परंतु ये बाल-मज़दूर पीड़ा के आँसू रोते हैं। बाल-मज़दूर आसानी से दबाव में आ जाते है। ये अपने अधिकारों के प्रति सजग नहीं होते, इसलिए इन्हें बहुत कम वेतन पर रखा जाता है और इनसे बहुत अधिक काम लिया जाता है।

दुर्भाग्य यह है कि इन बाल-श्रमिकों के हितों की देखभाल करने वाला कोई नहीं है। सरकार ने बाल-मज़दूरी को अपराध घोषित कर दिया है। परंतु उनकी नाक के नीचे बच्चे काम करते नजर आते हैं। यहाँ तक कि सरकारी अफसरों को चाय पिलाने वाला भी बाल-मज़दूर होता है। समाजसेवी संस्थाएँ भी बाल-मज़दूरों की दुर्दशा पर खूब आँसू बहाती हैं। वे कभी-कभी उनकी सहानुभूति में नकली आँसू भी बहा लेती हैं, परंतु इस समस्या का समाधान उनके वश में नहीं है। वास्तव में भारत में गरीबी इतनी अधिक है कि बाल-मज़दूरों के माता-पिता उनसे मज़दूरी कराने के लिए विवश हैं। हालाँकि सरकार ने आरंभिक शिक्षा को पूरी तरह मुक्त कर दिया है, परंतु बाल-मज़दूरों के माँ-बाप तो उनसे मज़दूरी कराकर धन कमाना चाहते हैं। उनकी इस मानसिकता को बदलना होगा। इसके लिए लंबे समय तक समझाने-बुझाने और प्रेरित करने का सिलसिला शुरू करना होगा। तभी बच्चों को उनका बचपन लौटाया जा सकेगा। **[6]**

(ग) महिला सुरक्षा

मैथिलीशरण गुप्त ने नारी की असहाय अवस्था पर आँसू बहाते हुए कहा था-

अबला जीवन हाय! तुम्हारी यही कहानी
आँचल में है दूध, और आँखों में पानी।।

सौ वर्ष पहले कही गई वह उक्ति आज भी ज्यो-ज्यों-की-त्यों सच है। कहने को भारत की नारी ने बहुत प्रगति की है। दिखने में वह पुरुष के कंधे से कंधा मिलाकर आगे बढ़ रही है। किंतु सच्चाई एकदम विपरीत है। साँझ का झुटपुटा होते ही उसे अपने 'अबला' होने का अहसास होने लगता है। सड़क पर चलने वाला हर शख़्स उसे दबोच लेना चाहता है। सूनी सड़कें ही नहीं, आन-बान-शान से जगमगाते नगर भी उसकी अस्मत लूट लेना चाहते हैं। पहले भारत की राजधानी दिल्ली बदनाम हुई, अब सुरक्षित मानी जाने वाली मुंबई की भी

पोल खुल रही है। ऐसा लगता है कि भारतीय नारी कहीं भी सुरक्षित नहीं है। न घर में, न बाहर, न कार्यालय में, न परिवार में।

प्रश्न उठता है कि नारी-सुरक्षा के सभी उपाय होते हुए भी वह असुरक्षित क्यों है? क्या भारत में नारी को सुरक्षा और सम्मान देने वाले कानूनों की कमी है? नहीं। क्या हमारी पुलिस कमज़ोर है? नहीं। कानून और पुलिस चाहे तो नारी के साथ होने वाला दुराचार समाप्त हो सकता है। हमारी न्यायपालिका भी असमर्थ नहीं है। फिर भी नारी पीड़ित है तो इसके गहरे सामाजिक कारण हैं।

सर्वेक्षण बताते हैं कि नारी का शोषण घर-परिवार और मुहल्ले में अधिक होता है, बाहर सूनी जगह में कम। जब नारी के संबंधी, रिश्तेदार, मित्र और परिचित ही उस पर बुरी नज़र रखते हैं तो बात चिंतनीय हो जाती है। यहाँ न पुलिस कुछ कर सकती है, न कानून। यहाँ समाज के संस्कार ही काम आ सकते हैं। आवश्यकता है कि हम अपने बच्चों को आरंभ से ही नारी-सम्मान, यौन-पवित्रता के संस्कार दें। जो भी इन सीमाओं का अतिक्रमण करे उनका घर-परिवार में बहिष्कार करें।

नारी-असुरक्षा का दूसरा पहलू कानून और पुलिस की लापरवाही से जुड़ा है। दुर्भाग्य से पुलिस और कानून में पुरुषों का बोलबाला है। वहाँ पुरुषों की मनमानी चलती है। अत: जब भी कोई पुरुष किसी नारी के साथ यौनाचार करता है तो उसका समाज उसे निर्मम होकर दंड नहीं देता, बल्कि बीच-बचाव करने की कोशिश करता है। इतनी शह पाकर दुष्ट और ढीठ बलात्कारियों का साहस बढ़ जाता है। इसका एक ही उपाय है कि संसद, कानून और पुलिस में नारी को बराबर का प्रतिनिधित्व मिले। नारी कानून बनाए, सुरक्षा में भागीदारी हो और न्यायाधीश की कुर्सी पर बैठे। तब जाकर इस समस्या से कुछ सीमा तक छुटकारा मिल सकता है।

नारी पर होने वाले बल-प्रयोग को प्रोत्साहन देने वाले कुछ अन्य कारण भी हैं। आज हर हाथ में मोबाइल है। मोबाइल में इंटरनेट है और इंटरनेट पर नाना कामुकतापूर्ण साइट्स हैं। इन पर किसी का नियंत्रण नहीं है। करोड़ों-करोड़ों युवक घर बैठे-बैठे इन्हीं आपत्तिजनक साइट्स को देखते-देखते विकृत हो जाते हैं। इन पर रोक लगाना बेहद जरूरी है। इनसे संबंधित प्रभावी कानून होने चाहिए। जब तक अबोध युवक-युवतियों को सही मार्गदर्शन नहीं दिया जाएगा तब तक यह दुराचार बढ़ता रहेगा। **[6]**

13. सेवा में,

प्रधानाचार्य

आगरा पब्लिक स्कूल,

आगरा

विषय- 'विद्यालय में पीने के स्वच्छ पानी की व्यवस्था हेतु प्रार्थना-पत्र'

महोदय,

सविनय निवेदन है कि हमारे विद्यालय में गत कई सप्ताह से पीने के स्वच्छ पानी की दिक्कत हो रही है, इन दिनों जो पानी पीने के लिये सप्लाई किया जा रहा है वह दूषित है, पीने योग्य नहीं है, इसे पीकर विद्यालय के विद्यार्थियों का स्वास्थ्य खराब हो सकता है और दूषित जल के कारण होने वाली तमाम बीमारियाँ विद्यार्थियों को हो सकती हैं।

अत: आप से अनुरोध है कि आप इस दिशा में तत्काल कदम उठाते हुए विद्यालय में पीने के स्वच्छ पानी की पूर्ति (व्यवस्था) कराने हेतु आवश्यक निर्देश जारी करें।

प्रार्थी

सचिन अग्रवाल

दिनांक..... **[5]**

अथवा

सेवा में,
प्रबंधक,
पंजाब नेशनल बैंक
बरहन (आगरा)

विषय- ए.टी.एम. कार्ड खोने की सूचना

महोदय,

निवेदन है कि प्रार्थी की बचत खाता संख्या 6918XXXX आपकी शाखा में है। जिसमें लगभग ₹ 1,25,000 जमा हैं। मैने कुछ दिनों पहले ही आपकी बैंक से ए.टी.एम. कार्ड लिया है। पर कल शाम को मेरा बैग घर से आँवलखेड़ा आते समय कहीं गाड़ी से गिर गया है, जिसमें कुछ जरूरी कागजातों के साथ मेरा ए.टी.एम. कार्ड भी था, काफी प्रयास के बाद भी नहीं मिला। अत: आप से निवेदन है कि आप मेरे ए.टी.एम. द्वारा मेरे बचत खाते से भुगतान न करें और मेरे ए.टी.एम. कार्ड को तत्काल बंद कर दें।

अत: सूचनार्थ एवं आवश्यक कार्यवाही हेतु पत्र आपकी शाखा में प्रस्तुत है।

भवदीय
पूनम अरोड़ा
पंचायत अधिकारी
बरहन (आगरा)
दिनांक....

14.

दिल्ली पब्लिक स्कूल, शास्त्रीपुरम

दिनांक..... **सूचना**

कक्षा 9 व 10 के समस्त छात्र-छात्राओं को सूचित किया जाता है कि आगामी सोमवार दिनांक 31 जुलाई 20×× को सातवें व आठवें कालांश में विद्यालय के 'ऑडिटोरियम' लक्ष्मीबाई हॉल में कठपुतली का तमाशा दिखाया जाएगा। कक्षा 9 व 10 के सभी छात्र-छात्राएँ पंक्तिबद्ध होकर अपने कक्षाध्यापकों के साथ वहाँ आएँ।

आज्ञा से-
डा. सरोज अग्रवाल
मुख्य अध्यापिका

[5]

अथवा

डी.ए.वी पब्लिक स्कूल, आगरा

दिनांक..... **सूचना**

सभी को यह सूचित किया जाता है कि 18 सितंबर 20×× को विद्यालय परिसर में ही मेरी अंग्रेजी की नोटबुक गलती से कहीं गिर गई है। जिस किसी को भी यह प्राप्त हुई हो, वे कृपया मेरी नोट बुक मुझे वापस कर दें या प्रधानाचार्य के कक्ष में उसे जमा कर दें।

प्रभात कुमार
क्रमांक- 11
कक्षा- 10वीं 'अ'

15. **माँ-बेटे के बीच संवाद**

सचिन - माँ, हमारी गर्मियों की छुट्टियाँ होने वाली हैं, हम घूमने कहाँ जाएँगे?
माँ - बेटा, इस बार हम गर्मियों की छुट्टियों में कहीं नहीं जाएँगे, क्योंकि जहाँ भी जाओ वहीं वाहनों का शोर-शराबा और प्रदूषण; ऊपर से खर्चा अलग होता है।
सचिन - नहीं माँ, कहीं तो चलना पड़ेगा। हम पूरी साल इन छुट्टियों का इंतजार करते हैं।

माँ – बेटा, छुट्टियाँ मनाने और मनोरंजन करने के और भी तरीके हैं, हम घर पर रहकर खूब मस्ती करेंगे, एक साथ वक्त बिताएँगे।

सचिन – लेकिन माँ, मेरे तो सभी मित्र घूमने जा रहे हैं।

माँ – बेटा कोई बात नहीं है, तुम इस बार घर पर रहकर तो देखो। अब तुम बड़ी कक्षा में आ गए हो, अब तुम्हें पढ़ाई और अपने स्वास्थ्य को भी अधिक समय देने की ज़रूरत है।

सचिन – ठीक है माँ, आप कहती हैं तो इस बार घूमने नहीं जाएँगे, घर पर रहकर ही समय का सदुपयोग करेंगे। **[5]**

अथवा

सहपाठी से संवाद

सरिता – अनीता! कैसी हो?

अनीता – मैं तो अच्छी हूँ! तुम बताओ, कल विद्यालय क्यों नहीं आई?

सरिता – अनीता, कल अचानक मेरी तबियत खराब हो गई थी। अनीता क्या तुम मुझे कक्षा में होने वाले कार्यों के विषय में बताओगी?

अनीता – हाँ, हाँ, क्यों नहीं।
विज्ञान विषय के अंतर्गत – पाठ–5 के प्रश्नोत्तर कराए हैं,
हिंदी में क्रियाविशेषण के भेद पढ़ाए गए हैं।

सरिता – अनीता! मुझे ये कार्य अभ्यास-पुस्तिका में करना है, क्या तुम मेरी मदद करोगी?

अनीता – हाँ जरूर! चलो आज मैं तुम्हारे साथ तुम्हारे घर चलती हूँ वहीं पर सारा कार्य कर लेंगे।

16. **प्रवेश प्रारंभ**

लोकनृत्य, सांस्कृतिक नृत्य व पाश्चात्य नृत्य
दिव्य ज्योति प्रशिक्षण केंद्र
अपनी प्रतिभा व कौशल को निखारें।
उच्च स्तरीय संकाय, आकर्षक एवं अत्याधुनिक तकनीकों से संपन्न
दिव्य ज्योति प्रशिक्षण केंद्र यूनिट– 2 एस. वी. रोड मुंबई– 400062
फोन नंबर– 022– 619504××
मोबाइल नंबर– 06892825××

[5]

अथवा

सेल

तूफानी सेल

सेल

खूबसूरत साड़ियाँ–सिल्क, सूती, शिफॉन
हर रंग, हर डिजाइन में उपलब्ध
कीमत ऐसी, कभी न होगी जैसी
सेल का लाभ शीघ्र उठाएँ – शीघ्र आएँ! शीघ्र पाएँ !

● ●

हिंदी 'बी'

प्रतिदर्श प्रश्न-पत्र

उत्तरमाला

8

सी.बी.एस.ई, कक्षा X

खंड 'क' अपठित बोध

10 अंक

1. (क)
- प्रकृति के विभिन्न रूप हमारे भीतर तरह-तरह की भावनाएँ एवं अनुभूतियाँ भरते हैं।
- हमारे अनुभव जगत का विस्तार करते हैं।

(सी.बी.एस.ई. अंक योजना, 2016) [2]

व्याख्यात्मक हल: हर मौसम का अपना मिजाज, अपना अंदाज, अपनी खुशबू, अपना स्पर्श होता है, जो हमें तरह तरह की भावनाओं, अनुभूतियों से भरकर हमारे अनुभव-जगत का विस्तार करता है। हम इन प्रकृति के रूपों, अर्थात ऋतुओं को नि:शब्द निहारने लगते हैं। इसका हम पर मनोवैज्ञानिक असर भी होता है।

(ख)
- रंग-बिरंगे फूलों का खिलना
- भीनी सुगंध का फैलना
- पतझड़ में फूल-पत्तों का उड़ना
- बारिश में सब तर हो जाना
- सर्द हवा के झोंके चलना

(किन्हीं दो का उल्लेख अपेक्षित) **(सी.बी.एस.ई. अंक योजना, 2016) [2]**

व्याख्यात्मक हल: प्रकृति का अपना एक निराला और सौंदर्य से भरा रूप है-बसंत ऋतु में रंग-बिरंगे फूलों का खिलना, उनकी भीनी-भीनी सुगंध का फैलना तथा वर्षा ऋतु में वर्षा से सब तर, निर्मल व स्वच्छ हो जाना, पतझड़ में फूल व पत्तों का झड़कर उड़ना व सर्द हवाओं का सभी को सिहरा देना आदि प्रकृति के ये सौम्य, रौद्र, चंचल, जड़ व जीवंत रूप हमें प्रभावित करते हैं।

(ग) ग्रीष्म में लंबे अलसाए दिन होने से। **(सी.बी.एस.ई. अंक योजना, 2016) [2]**

व्याख्यात्मक हल: गद्यांश में लेखक को ग्रीष्म ऋतु के लंबे व अलसाए दिन प्रभावित करते हैं क्योंकि लेखक का मानना है कि हर मौसम का मानव मन पर मनोवैज्ञानिक असर होता है। जैसे कि लेखक को ग्रीष्म के अलसाए दिन लंबे होने के कारण ठंडे बंद कमरों में लेटे हुए दिलो-दिमाग को आत्मचिंतन का खूब समय देते है।

(घ)
- बसंत को। रागात्मक प्रवृति उत्पन्न होती है एवं रचनात्मक क्षमता विकसित होती है।

(सी.बी.एस.ई. अंक योजना, 2016) [2]

व्याख्यात्मक हल: मधुमास एक महीना है जिसमें बसंत ऋतु का अनुभव किया जाता है। मधुमास हमारी रचनात्मक प्रवृत्ति को तराश देता है और हमें तरह-तरह से रचनात्मक बनाता है।

(ङ) • सुख और दु:ख की दशाएँ स्थायी नहीं होतीं इसलिए तटस्थ भाव से जीना चाहिए।
(सी.बी.एस.ई. अंक योजना, 2016) [1]

व्याख्यात्मक हल: सुख और दु:ख में से एक भी दशा स्थायी नहीं हैं, अत: हमें न सुख में अधिक सुखी और न दुख में अधिक दुखी होना चाहिए; तटस्थ भाव से जीना चाहिए।

(च) लेखक का मानना है कि ग्रीष्म ऋतु के अलसाए दिन लंबे होने के कारण ठंडे बंद कमरों में लेटे दिमाग को आत्मचिंतन का खूब समय देते हैं तथा मधुमास हमारी रागात्मक प्रवृत्ति को तराश देता है और हमें रचनात्मक बनाता है। **[1]**

खंड 'ख' व्यावहारिक व्याकरण 16 अंक

2. • ध्वनियों की स्वतंत्र, सार्थक इकाई शब्द कहलाती है।
उदाहरण-स्वतंत्रता (शब्द)
हमें स्वतंत्रता का मान रखना चाहिए। (पद) **(सी.बी.एस.ई. अंक योजना, 2017) [1]**

3. (क) वह फल खरीदने बाज़ार गया और वहाँ से फल लेकर आ गया। **[1]**
(ख) चाय पीने की यह एक विधि है जिसे जापानी में चा-नो-यू कहते हैं / चाय पीने की जो यह एक विधि है जापानी में उसे चा-नो-यू कहते हैं। **[1]**
(ग) भारतीय सैनिकों की कोई बराबरी नहीं कर सकता। **(सी.बी.एस.ई. अंक योजना, 2017) [1]**

4. (क) **(i)** नीला है जो कमल-कर्मधारय समास **[1]**
(ii) घोड़े की साल/घोड़े के लिए शाला-तत्पुरुष समास **[1]**
(ख) **(i)** नवाभूषण-कर्मधारय समास **[1]**
(ii) गगनचर-कर्मधारय समास **(सी.बी.एस.ई. अंक योजना, 2017) [1]**

5. (क) सावित्री सत्यवान की पत्नी थीं/थी। **[1]**
(ख) प्रधानाचार्या ने छात्र को बुलाया। **[1]**
(ग) वह परीक्षा में अनुत्तीर्ण/फेल हो गया। **[1]**
(घ) मोहन सोया। **(सी.बी.एस.ई. अंक योजना, 2017) [1]**

6. मुठभेड़ होना- (आमने-सामने लड़ाई होना) पुलिस और डकैतों के बीच लगभग तीन घंटे मुठभेड़ हुई। **[1]**
एक-एक शब्द को चाट जाना- (अच्छी तरह याद करना) राकेश ने परीक्षा आने पर पूरी किताब के एक-एक शब्द को चाट लिया। **[1]**
आग में घी डालना- (क्रोध को बढ़ाना) - माँ तो पहले से ही गुस्से में थीं, तुमने ना कहकर और आग में घी डाल दिया। **[1]**
आँखें खुलना- (होश आना) - धोखा खा कर ही सही; चलो तुम्हारी आँखें तो खुलीं। **[1]**

खंड 'ग' पाठ्यपुस्तक तथा पूरक पाठ्यपुस्तक 28 अंक

7. (क) 26 जनवरी 1931 स्वतंत्रता दिवस में कोलकता का योगदान बहुमूल्य था। पूरा कोलकाता आंदोलन में सम्मिलित था। मकानों में राष्ट्रीय ध्वज फहराए गए। हर व्यक्ति घर-घर जाकर झंडा फहराने और कानून तोड़ने के महत्व को बताता। विद्यार्थीगण, महिलाएँ व्यापारी, नेता सभी ने सभा-स्थल पर कानून की परवाह किए बिना अहिंसक बनकर लाठियों के प्रहार को झेला। **[2]**

(ख) 'बड़े भाई साहब' कहानी में छोटा भाई अपने बड़े भाई से समय-समय पर रोकने-टोकने व डाँटने के कारण डरता था। बड़े भाई साहब को देखते ही छोटे भाई के प्राण सूख जाते थे। अपने बड़े भाई को देखकर छोटे भाई को ऐसा लगता मानो उसके सिर पर नंगी तलवार लटक रही है। **[2]**

(ग) 'पतझड़ में टूटी पत्तियाँ' पाठ के लेखक के अनुसार- 'प्रैक्टिकल आइडियालिस्ट' उन लोगों को कहते हैं जो अपने आदर्शो को व्यावहारिक बनाकर जीवन में अपनाते हैं। जो आदर्शों को व्यवहार के योग्य बनाते हैं। **[2]**

(घ) 'धरती किसी एक की नहीं है' से लेखक का अभिप्राय है कि ' आज मनुष्य धरती को केवल अपनी ही सम्पत्ति समझता है जबकि धरती पर तो पंछी मानव, पशु, नदी, पर्वत, समुद्र सभी का एक समान अधिकार है अर्थात सभी इस धरती के हिस्सेदार है। **[2]**

8. बड़े भाई साहब अपने छोटे भाई पर रौब जमाने के लिए लंबे-लंबे भाषण देते हैं, उनकी अत्यधिक बोलने की आदत है। वे अपने छोटे भाई के ऊपर अपने बड़े होने का एहसास कराने का व रौब जमाने का एक भी मौका नहीं छोड़ते। परीक्षा में वे फेल हो जाते हैं और फेल होने की कमजोरी छिपाने के लिए तर्क देते हैं कि परीक्षा उत्तीर्ण कर लेने से मानसिक विकास नहीं होता। अत: यह कहा जा सकता है कि उनका अत्यधिक बोलना उनकी कमजोरी है, क्योंकि उन पर छोटे भाई की निगरानी का दायित्व है, इस स्थिति में उनका अत्यधिक बोलना उनकी असुरक्षा को ही दर्शाता है। **[5]**

अथवा

'मुट्ठी भर आदमी, मगर ये दमखम' प्रस्तुत कथन से तात्पर्य है कि वज़ीर अली के पास मुठ्ठी भर आदमी थे, अर्थात बहुत कम आदमियों की सहायता प्राप्त थी पर वज़ीर अली द्वारा इतनी शक्ति और दृढ़ता का परिचय देना कमाल की बात थी। सालों साल जंगल में रहने पर भी स्वयं कर्नल, उनकी सेना का बड़ा समूह जो कि भारी संख्या में युद्ध सामग्री से लैस था, ये सभी मिलकर भी वज़ीर अली को पकड़ नही पाए थे, उसकी अदम्य शक्ति और दृढ़ता को जीत नहीं पाए थे क्योंकि वह हर काम इतनी सावधानी तथा होशियारी से करता था कि उसने व उसके मुट्ठीभर आदमियों ने ही कर्नल की विशाल सेना समूह की नाक में दम कर दिया था।

9. (क) प्रस्तुत पंक्ति 'तब मुख पहचानूँ छिन-छिन में' का भाव यह है कि मैं अपना सिर झुकाकर सुख के दिन में सुख को पहचानकर समय को बिताते हुए दु:ख और सुख के महत्व को समझूँ उसके लिए प्रभु आप मुझे धैर्यवान बनने का गुण प्रदान करना। **[2]**

(ख) उक्त गीत में 'सर पर कफन बाँधना भारतीय वीर सैनिकों के बलिदान की भावना की ओर संकेत करता है, हमारे भारतीय वीर मर मिटने की भावना से विदेशी आक्रमण का मुकाबला करते हैं। **[2]**
उक्त पंक्ति द्वारा कवि ने यह आशा की है कि वे देश की सुरक्षा के लिए बलिदान देने को सदा तत्पर रहेंगे।

(ग) मैथिलीशरण गुप्त जी ने कहा है कि जो मनुष्य स्वयं अपने लिए नहीं जीता, बल्कि समाज के लिए जीता है, वह कभी नहीं मरा करता, ऐसा मनुष्य संसार में अमर हो जाता है। स्वयं अपने लिए खाना, कमाना और जीना तो पशु का स्वभाव है; सच्चा मनुष्य वह है जो संपूर्ण मनुष्यता के लिए जीता और मरता है। **[2]**

(घ) 'मेखलाकार' शब्द का अर्थ है करधनी के आकार की पहाड़ की ढाल। कवि ने इस शब्द का प्रयोग यहाँ पर्वत और पर्वत मालाओं के सौंदर्य का वर्णन करने के लिए किया है। जब वर्षा ऋतु में पर्वतों के प्राकृतिक वेश में पल-पल जो परिवर्तन होता है उसको बताने के लिए किया है।

10. बिहारी की भक्ति-भावना प्रेम पर आधारित है। कवि बिहारी कभी तो कृष्ण के रूप-सौंदर्य पर मुग्ध होते हैं; कभी वे गोपियों को बतरस कहते हुए नायक का चित्रण करते हैं, तो कभी बिहारी के कृष्ण राधिका को मन में बसाए हुए दिखाई देते हैं। ऐसा लगता है कि मानों संसार के कष्टों और अपने भक्तों से भगवान का कोई सरोकार नहीं है। बिहारी यह भी मानते हैं कि भगवान सच्चे हृदय वाले भक्त के हृदय में ही वास करते हैं उन्हें बाह्य आडंबरों की कोई आवश्यकता नहीं होती। **[5]**

अथवा

कविता के आधार पर कंपनी के अफसरों ने भारतीय क्रांतिकारियों को दबाने के लिए इस 'तोप' का प्रयोग किया था। इन तोपों ने न जाने कितने शूरवीरों को मार डाला था। उस युग में लोगों को मारने वाली यह तोप आज निरर्थक है। वर्तमान समय में 'चिड़ियाँ और गौरैया इस तोप पर बैठकर बातें करती हैं, लड़के घुड़सवारी करते हैं। इससे पता चलता है कि अब उन्हें उस शक्तिशाली तोप का कोई डर नहीं है।

11. (क) हरिहर काका की उपेक्षा एवं उचित देख-रेख न किए जाने तथा परिवार की स्वार्थपरता के वर्णन को पढ़कर हमारा मन व्यथित हो गया। इससे लगता है कि समाज में रिश्तों की अब अहमियत समाप्त होती जा रही है। परिवार और रिश्ते दोनों ही अपनी भूमिका का निर्वाह नहीं कर पा रहे हैं। उनमें स्वार्थ-लोलुपता आती जा रही है और पारिवारिक संबंधों से भाईचारा समाप्त होकर उसने स्वार्थ, हिंसा व लोभ का रूप धारण कर लिया है परिणामस्वरूप सामाजिक रिश्तों में दूरियाँ आ रही हैं। अत: हम सभी को ऐसी स्थिति को संभालने के लिए अपने घर में धैर्य रखते हुए वसीयत बनवाकर उसमें स्पष्ट रूप से यह लिखवा देते है कि खेतों से आने वाली आय उसे मिलेगी जो उनकी सेवा करेगा। इतना ही नहीं अतिशय उद्‌वेग को नियंत्रित रखते हुए निर्णय लेने में सावधानी रखते हैं। **[3]**

(ख) 'सपनों के से दिन' पाठ में लेखक को बचपन में स्कूल जाना अच्छा नहीं लगता था, क्योंकि लेखक को कक्षा कार्य करने तथा अध्यापक द्‌वारा सिखाए गए सबक कभी याद नहीं होते थे और न ही लेखक को गृहकार्य करने में रुचि थी। पर जब लेखक ने स्काउटिंग का अभ्यास किया तो उसे स्कूल अच्छा लगने लगा। जब वे नीली-पीली झंडियाँ लेकर पी.टी. साहब की सीटी पर या वन-टू-थ्री कहने पर झंडियाँ ऊपर नीचे या दाएँ-बाएँ करते थे तब उन्हें बहुत अच्छा लगता था। खाकी वर्दी और गले में दो रंग का रूमाल लटकाना भी उन्हें बहुत अच्छा लगता था; विशेषकर जब पी.टी. मास्टर उन्हें शाबाशी देते थे तो उन्हें बहुत अच्छा लगता था। परिणामत: लेखक को स्कूल जाना अच्छा लगने लगा। **[3]**

खंड 'घ' लेखन

26 अंक

12. (क) बढ़ता आतंकवाद: एक चुनौती

आतंकवाद का अर्थ है-भय। जनता में भय फैलाने वालों को आतंकवादी कहा जाता है। आतंकवादी अपने स्वार्थपूर्ण राजनैतिक, सामाजिक अथवा धार्मिक उद्‌देश्यों की पूर्ति के लिए लोगों में भय उत्पन्न करते हैं। वे निरीह लोगों की हत्या करके, सार्वजनिक स्थलों पर बम विस्फोट करके, सरकारी संपत्ति को हानि पहुँचाकर, अपनी तोड़-फोड़ की कार्रवाई द्‌वारा समाज में आतंक फैलाते हैं। इस कारण जन-जीवन हर क्षण भयाक्रांत बना रहता है। आतंकवाद वास्तव में अतिवाद का दुष्परिणाम है। बेरोजगारी, अशिक्षा, सामाजिक-आर्थिक विषमताएँ, राजनीतिक स्वार्थ, शक्तिशाली देशों द्‌वारा निर्बल देशों के प्रति उपेक्षा का व्यवहार, क्षेत्रवाद, धर्मांधता, भाषायी मतभेद, भौगोलिक एवं ऐतिहासिक कारण, सांस्कृतिक टकराव, प्रशासनिक मशीनरी की निष्क्रियता, स्वार्थी मनोवृति आदि के कारण आतंकवाद से जूझना पड़ रहा है, वह भयावह और चिंतनीय है। इसके मूल में अलगाववादी और विघटनकारी तत्व सक्रिय हैं। इसका दुष्परिणाम यह है कि आज कश्मीर में आतंकवाद अपनी चरम सीमा पर है। वहाँ के मूल निवासी आज अपने ही राज्य में शरणार्थी बन गए हैं। **[6]**

(ख) मेरे जीवन का लक्ष्य या उद्‌देश्य

मैं दसवीं कक्षा का छात्र हूँ। मेरे मन में एक ही सपना है कि मैं इंजीनियर बनूँगा। 'लक्ष्यपूर्ण जीवन के लाभ' जब से मेरे भीतर यह सपना जागा है, तब से मेरे जीवन मे अनेक परिवर्तन आ गए हैं। अब में अपनी पढ़ाई की ओर अधिक ध्यान देने लगा हूँ। पहले क्रिकेट के खिलाड़ियों और फिल्मी तारिकाओं में गहरी रुचि लेता था, अब ज्यामिति की रचनाओं और रासायनिक मिश्रणों में रुचि लेने लगा हूँ। अब पढ़ाई में रस आने लगा है। निरुद्‌देश्य पढ़ाई बोझ थी। लक्ष्यबद्‌ध पढ़ाई में आनंद है। सच ही कहा था कार्लाइल ने-**''अपने जीवन का एक लक्ष्य बनाओ और इसके बाद अपना सारा शारीरिक और मानसिक बल, जो ईश्वर ने तुम्हें दिया है, उसमें लगा दो।''**

मैंने निश्चय किया है कि मैं इंजीनियर बनकर इस संसार को नए-नए साधनों से संपन्न करूँगा। मेरे देश में जिस वस्तु की आवश्यकता होगी, उसके अनुसार मशीनों का निर्माण करूँगा। देश में जल-बिजली, सड़क या संचार-जिस भी साधन की आवश्यकता होगी, उसे पूरा करने में अपना जीवन लगा दूँगा।

मैं गरीब परिवार का बालक हूँ। मेरे पिता किराए के मकान में रहे हैं। धन की तंगी के कारण हम अपना मकान नहीं बना पाए। यही दशा मेरे जैसे करोड़ों बालकों की है। मैं बड़ा होकर भवन-निर्माण की ऐसी सस्ती, सुलभ योजनाओं में रुचि लूँगा जिससे मकानहीनों को मकान मिल सकें।

मैंने सुना है कि कई इंजीनियर धन के लालच में सरकारी भवनों, सड़कों, बाँधों मे घटिया सामग्री लगा देते हैं। यह सुनकर मेरा हृदय रो पड़ता है। मैं कदापि यह पाप-कर्म नहीं करूँगा, न अपने होते यह काम किसी को करने दूँगा।

मैंने अपने लक्ष्य को पूरा करने की दिशा में प्रयास करने आरंभ कर दिए हैं। गणित और विज्ञान में गहरा अध्ययन कर रहा हूँ। अब मैं तब तक आराम नहीं करूँगा, जब तक कि लक्ष्य को पा न लूँ। कविता की ये पंक्तियाँ मुझे सदा चलते रहने की प्रेरणा देती हैं।- **[5]**

लक्ष्य तक पहुँचे बिना, पथ में पथिक विश्राम कैसा?

(ग) हिंदी दिवस

भारत में हर वर्ष 14 सिंतबर को हिंदी दिवस मनाया जाता है। इस दिन का ऐतिहासिक महत्व है। 14 सिंतबर 1949 को भारत की संविधान सभा ने हिंदी को भारत की राजभाषा घोषित किया था। जो हिंदी अब तक अघोषित रूप से भारत की राष्ट्रभाषा के रूप में स्वीकृत थी, अब घोषित रूप से भारत की राजकाज की भाषा बन गई है। आज भी उस ऐतिहासिक फैसले को याद कराने के लिए इस दिन को सरकारी कार्यालयों में हिंदी दिवस के रूप में मनाया जाता है।

भारत विभिन्न भाषाओं वाला देश है। यहाँ अनेक भाषाएँ बोली जाती हैं। संविधान में ही 22 भाषाओं को राष्ट्रीय भाषाओं के रूप में मान्यता दी गई है। कश्मीरी, डोगरी, पंजाबी, नेपाली, संस्कृत, सिंधी, उर्दू, उड़िया, बंगाली, मराठी, गुजराती, कोंकड़ी, मैथिली, बोडो, तमिल, कन्नड़, मलयालम, तेलुगु आदि भाषाएँ भारत की राष्ट्रीय भाषाएँ ही हैं। ये किसी-न-किसी राज्य की राजभाषा भी हो सकती हैं, परंतु पूरे देश को एकता के सूत्र में बाँधने वाली भाषा एकमात्र हिंदी ही है।

स्वतंत्रता आंदोलन के दौरान हिंदी भाषा का ही बोलबाला था। महात्मा गांधी, सरदार पटेल आदि क्रांतिकारियों ने हिंदी के माध्यम से ही स्वतंत्रता की लड़ाई लड़ी। यहाँ तक कि गांधी, पटेल, सुभाष आदि नेता हिंदीभाषी नहीं थे, फिर भी उन्होंने हिंदी को संपर्क भाषा, माध्यम भाषा और राष्ट्रभाषा के रूप में विकसित करने का प्रयास किया। इतना ही नहीं, भारत में व्यापार करने वाले विदेशी संस्थान हों या स्वयं अंग्रेज शासक, सभी ने हिंदी भाषा के महत्व को समझा। इससे यह बात स्पष्ट हो जाती है कि हिंदी ऊपर से थोपी नहीं गई है बल्कि यह यहाँ की वास्तविक सच्चाई है। आज़ादी से पहले इंग्लैंड से आने वाले शासक हिंदी भाषा सीखकर पूरे देश पर शासन किया करते थे।

आज सब जगह अंग्रेजी का बोलबाला नजर आता है। शिक्षा और कामकाज में अंग्रेजी की तूती बोल रही है। परंतु यह भी सच है कि दैनिक व्यवहार और मनोरंजन में हिंदी का ही प्रमुख स्थान है। समाचार-पत्र, दूरदर्शन के चैनल, लोकप्रिय धारावाहिक, फिल्में, विज्ञापन आदि सभी में हिंदी का ही बोलबाला है।

हिंदी भाषा न केवल देश की बड़ी भाषा है बल्कि यह दिल से भी बहुत उदार है। इसमें पंजाबी, मराठी, गुजराती, बंगला आदि भाषाओं के साथ चलने की अद्‌भुत क्षमता है। आजादी के बाद इसने अंग्रेजी के साथ भी तालमेल दिखाया है। आज हिंदी भाषा में अंग्रेजी तथा अन्य भारतीय भाषाओं के हजारों शब्द इस तरह समा गए हैं कि वे हिंदी के ही प्रतीत होते हैं। अपनी इसी लोचदार प्रवृति के कारण इसका विकास अनवरत होता जा रहा है। **[5]**

13. सेवा में,

अध्यक्ष,

दिल्ली परिवहन निगम, दिल्ली।

विषय-बस में छूट गए सामान के विषय में

महोदय,

मैं आपको पत्र लिखकर ही स्वयं को धन्य मान रहा हूँ। मैं कल दिनांक 18 मार्च, 20×× को पहाड़गंज के लिए बस में चढ़ा, परंतु जब मैं उतरा तो उस दिन जल्दबाजी में मेरा अटैचीकेस बस में रह गया। उसमें मेरे

सर्टिफिकेट तथा कुछ आवश्यक कागजात थे। वे कागजात मेरे लिए अत्यंत महत्वपूर्ण हैं। आपके बस कंडक्टर ने मेरा यह अटैचीकेस मेरे घर के पते पर आकर दिया। सच, मुझे अपने सामान के मिल जाने की इतनी प्रसन्नता हुई, और मुझे लगा कि अभी भी दुनिया में ईमानदारी शेष है। मैं किन शब्दों में उनका आभार व्यक्त करूँ। इस महान कार्य के लिए आप उन्हें पुरस्कृत करने की कृपा करें। मेरे साथ घटने वाली यह घटना मेरे जीवन को सदा दिशा देती रहेगी।

भवदीय

अ.ब.स.

पता ..... **[6]**

अथवा

सेवा में,

प्रबंधक

केनरा बैंक, आगरा।

विषय-आधार कार्ड को बैंक खाते में जोड़ने के संबंध में

महोदय,

निवेदन है कि प्रार्थी का बचत खाता संख्या 6918 आपकी शाखा में है। आपके बैंक से आधार लिंक संबंधी फार्म के साथ मैंने अपना आधार नंबर लिखकर दे दिया है, आप मेरे आधारकार्ड को बैंक खाते से जुड़वाने की कृपा करें जिससे मेरा बचत खाता सुचारु रूप से चल सकें मैं आपकी आभारी रहूँगी।

भवदीय

मोनिका वर्मा

29, शहीद नगर, आगरा

दिनांक .....

14.

किशोरी रमण विद्यालय मथुरा

दिनांक..... **सूचना**

विद्यालय के प्रशासन द्वारा यह निर्णय लिया गया है कि छात्रों के परिवार के सदस्यों के सम्मान में एक कार्यक्रम 14 अगस्त को आयोजित किया जाएगा। इस संबंध में आपके सुझावों का स्वागत है। कृपया हस्ताक्षरकर्ता से 18 से 24 जुलाई के बीच विद्यालय के समय में संपर्क करें।

सचिन भदौरिया

सचिव

[6]

अथवा

सूचना

मारुति अपार्टमेंट

दिनांक.....

मारुति अपार्टमेंट के सभी सदस्यों से अनुरोध है कि वे सभी सोसाइटी की स्वच्छता को बनाए रखने में पूर्ण सहयोग करें। इस दिशा में लापरवाही बरतने पर आर्थिक जुर्माना लगाया जाएगा। आप सभी का योगदान अपेक्षित है।

मयंक उपाध्याय

सचिव

15. पिता-पुत्र के मध्य संवाद

पिता – दीपक, कुछ दिन से देख रहा हूँ, बड़े थके-थके लगते हो। क्या बात है?,

दीपक – हाँ पिताजी, पता नहीं नींद भी ज्यादा आती है और थोड़ी थकावट महसूस होती है।

पिता – क्या तुम रोज थोड़ा व्यायाम करते हो, या सैर पर जाते हो?

दीपक – इन सबके लिए समय ही कहाँ है, पढ़ाई से तो फुर्सत नहीं मिलती।

पिता – यह तुम गलत कर रहे हो। यदि रोज थोड़ा समय व्यायाम व सैर के लिए निकालोगे तो तुम्हारा स्वास्थ्य सुधरेगा और जितना अभी चार घंटे में पढ़ते हो, 2 घंटे में ही पढ़ पाओगे। क्योंकि नियमित व्यायाम से शरीर ही नहीं, मस्तिष्क भी स्वस्थ व चुस्त बनता है।

दीपक – यह तो मैंने सोचा ही नहीं था। अब से सबसे पहले सुबह व्यायाम व सैर करूँगा और फिर अन्य काम। **[5]**

अथवा

दो छात्रों में संवाद

नरेंद्र – प्रदीप, मित्र मुझे हिंदी की कक्षा में पढ़ना बहुत पसंद है, किंतु कक्षा में छात्र-छात्राओं द्वारा की जाने वाली बातचीत के कारण पढ़ने का आनंद नहीं आता है।

प्रदीप – सही कहा मित्र! मुझे भी डा. शर्मा का हिंदी पढ़ाने का तरीका, उनका व्याख्यान करने का अंदाज बहुत सजीव लगता है। किंतु कुछ ऐसे विद्यार्थी जिन्हें पढ़ाई से कोई सरोकार नहीं है, लगातार बात करते रहते हैं। उनके कारण अन्य विद्यार्थी ठीक से नहीं पढ़ पाते हैं।

नरेंद्र – हाँ प्रदीप! हमें इस विषय में कक्षा में सभी से बात करनी होगी। तभी इस समस्या का समाधान सुझाया जा सकता है।

प्रदीप – हाँ नरेंद्र! तभी कक्षा में शांतिपूर्वक पढ़ाई का आनंद आएगा।

नरेंद – ठीक है; कल ही इस विषय में बात करते हैं।

16.

सूरजकुंड हस्तशिल्प मेला

मुख्य आकर्षण

- **बच्चों के लिए झूले, खिलौने**
- **हस्तशिल्प से संबंधित वस्तुएँ**
- **विभिन्न राज्यों का खान-पान**
- **विभिन्न सांस्कृतिक कार्यक्रम**

प्रवेश शुल्क मात्र ₹ 50

पता: सूरजकुंड, फरीदाबाद, हरियाणा (भारत) दक्षिण दिल्ली से 8 कि.मी. **[5]**

अथवा

आवश्यकता है

संस्कृति विद्यालय विकास पुरी, नई दिल्ली में अंग्रेजी शिक्षक का पद खाली है।
इच्छुक आवेदक विद्यालय के आवेदन पत्र को भरकर
दिनांक 25 जुलाई 2017 तक जमा करवाएँ
अधिक जानकारी के लिए संपर्क करें
(विद्यालय सचिव फोन. नं. 9410244342)

● ●

हिंदी 'ब'

प्रतिदर्श प्रश्न-पत्र
उत्तरमाला

9

सी.बी.एस.ई, कक्षा X

खंड 'क' अपठित बोध

10 अंक

1. (क) भारत एक स्वतंत्र धर्मनिरपेक्ष राष्ट्र है। यहाँ अनेक धर्मानुयायी तथा भाषा-भाषी लोग रहते हैं। एक ध्वज, एक लोकसभा, एक राष्ट्रचिह्न तथा एक ही संविधान मिलकर राष्ट्र का निर्माण करते हैं। **[2]**

(ख) भारत की सर्वाधिक उल्लेखनीय विशेषता अनेकता में एकता है। भारत में विभिन्न धर्म, जाति तथा संप्रदाय के लोग रहते हैं। सभी लोगों की भाषा तथा बोली तो अलग ही है लेकिन प्राकृतिक रूप से भी पहाड़, रेगिस्तान, उपजाऊ भूमि तथा समतल मैदान भी इसे विविधता प्रदान करते हैं। **[2]**

(ग) आधुनिक काल में द्रुतगामी यातायात के साधन बन गए हैं जिसके कारण हम एक भाग से दूसरे भाग में शीघ्र ही पहुँच जाते हैं। इसी कारण देश की भौगोलिक सीमा सिकुड़ गई प्रतीत होती है। **[2]**

(घ) सांस्कृतिक दृष्टि से विभिन्न धर्मों के धर्मावलंबी संपूर्ण देश में पाए जाते हैं। इसी सांस्कृतिक एकता की शक्ति के कारण इतना बड़ा देश एक सूत्र में बँधा हुआ है। **[2]**

(ङ) यहाँ के रहन-सहन, भाषा, बोली, विभिन्न त्यौहार एवं रिवाजों की अनेकता के बावजूद भावनात्मक रूप से एक-दूसरे से जुड़े हैं। **[1]**

(च) वर्तमान समय में कहीं-कहीं पृथकतावादी विचारधारा पनप रही है और हमें ऐसी स्थिति में प्रत्येक भारतीय को संकीर्ण विचारधारा का परित्याग कर व व्यापक दृष्टिकोण को अपनाकर अपने देश की राष्ट्रीय एकता की अक्षुण्णता को बनाए रखना चाहिए। **[1]**

खंड 'ख' व्यावहारिक व्याकरण

16 अंक

2. वाक्य में प्रयुक्त शब्द पद कहलाता है। यह पुस्तक उधर रख दो। रेखांकित शब्द पद है। **[1]**

3. (क) जब आसमान में बादल घिरते हैं तब किसान प्रसन्न होते हैं। **[1]**

(ख) सजग रहने वालों को हानि नहीं उठानी पड़ती। **[1]**

(ग) संयुक्त वाक्य। **(सी.बी.एस.ई. अंक योजना, 2016) [1]**

4. (क) (i) पढ़ने के लिए शाला - तत्पुरुष समास **[1]**

(ii) अरुण है जो कमल - कर्मधारय समास **[1]**

(ख) (i) स्वर्णाभूषण - तत्पुरुष समास **[1]**

(ii) नरोत्तम - तत्पुरुष समास **(सी.बी.एस.ई. अंक योजना, 2016) [1]**

5. **(क)** गाय का गरम दूध बच्चे को पिलाओ। **[1]**

(ख) कृपया आप हमें जाने की अनुमति दें / आप हमें जाने की अनुमति देने की कृपा करें। **[1]**

(ग) हमें आपकी बात माननी है। **[1]**

(घ) मैंने उसे सब बातें बता दीं / कह दीं। **(सी.बी.एस.ई. अंक योजना, 2016)** **[1]**

6. **कीचड़ उछालना** - बदनाम करना- मेरी पड़ोसन हमेशा लोगों पर कीचड़ उछालती रहती है। **[1]**

गले मढ़ना - अपना काम दूसरों पर थोपना- मेरा छोटा भाई हमेशा अपना काम मेरे गले मढ़कर चला जाता है। **[1]**

खून पसीना एक करना - (बहुत परिश्रम करना) - फैक्ट्री को चलाने के लिए शर्माजी और उनके बेटों ने खून-पसीना एक कर दिया। **[1]**

पाँचों उँगली घी में होना - (लाभ ही लाभ होना) - इस साल रमेश की तो पाँचों ऊँगलिया घी में हैं। **[1]**

खंड 'ग' पाठ्यपुस्तक तथा पूरक पाठ्यपुस्तक **28 अंक**

7. **(क)** निकोबार के लोग तताँरा को इसलिए पसंद करते थे, क्योंकि तताँरा सुंदर, शक्तिशाली, नेक, मददगार व्यक्ति था। सदैव दूसरों की सहायता के लिए तत्पर रहता था। वह अपने गाँव वालों की ही नहीं अपितु संपूर्ण द्वीप वासियों की सेवा करना अपना परम कर्तव्य समझता था। अपने इसी परोपकारी और त्यागी स्वाभाव के कारण वह चर्चित था और आदर का पात्र था और लोग उसे (तताँरा को) पसंद करते थे। **[2]**

(ख) 26 जनवरी, 1931 के दिन को अमर बनाने के लिए काफी तैयारियाँ की गई। कार्य का भार अलग-अलग लोगों को सौंपा गया, कार्यकर्त्ता घर-घर जाकर प्रचार कर रहे थे और कार्यकर्ताओं को भी समझाया जा रहा था। मकानों व पार्को की सजावट की गई थी तथा कलकत्ता के प्रत्येक भाग में झंडे लगाए थे। **[2]**

(ग) 'बड़े भाई साहब' कहानी में भाई साहब दिमाग को आराम देने के लिए अपनी कॉपियों के किनारों पर जानवरों के चित्र बनाते थे तथा कोई वाक्य या दस-बीस शेर कॉपी में लिखते थे। **[2]**

(घ) गांधी जी आदर्शवादी थे, उन्होंने अपने व्यवहार को आदर्श के समान ऊँचा बनाया था। दूसरे शब्दों में वे ताँबे में सोना मिलाते थे। वे अपने आदर्शों को व्यावहारिक बनाने के नाम पर उन्हें नीचे नहीं गिरने देते थे। **[2]**

8. हमारे विचार से आदर्श, व्यावहारिकता, सूझ-बूझ, सजगता, लाभ-हानि का हिसाब लगाकर कदम उठाना, नैतिकता, धैर्य, सत्यवादिता आदि ऐसे मूल्य हैं जो शाश्वत हैं। वर्तमान समय में इन शाश्वत मूल्यों की प्रासंगिकता न के बराबर दिखाई दे रही है। आज समाज का वातावरण बदल चुका है। लोगों की मानसिकता भी बदल चुकी है। वर्तमान समय में इन शाश्वत मूल्यों को हेय दृष्टि से देखा जाने लगा है। आदर्शवादी, सीधे-साधे व नैतिकता का आचरण करने वाले लोगों को हेय और तुच्छ मानकर व्यवहार किया जाता है। आज लोगों का विश्वास मूल्यों पर से उठता जा रहा है इसलिए हमारे विचार से वर्तमान समय में मूल्यों की प्रासंगिकता में गिरावट आती जा रही है। **[5]**

अथवा

वज़ीर अली अंग्रेजों से नफ़रत करता था तथा उनका कट्टर विरोधी था। अंग्रेजों को भारत से निकालना उसका एक मात्र लक्ष्य था इसलिए उसने अफगानिस्तान के बादशाह शाहे जमा को भारत पर आक्रमण करने का न्यौता दिया। उसने सारे भारत वर्ष में अंग्रेजों के खिलाफ वातावरण बना दिया था। अंग्रेजों का पक्ष लेने वालों को वह अपना शत्रु समझता था। इसीलिए उसने कंपनी के वकील की हत्या कर दी थी। वह सहादत अली को गद्दी से हटाना चाहता था और स्वयं उस पर कब्जा कर वहाँ से अंग्रेजों को निकालना चाहता था।

9. **(क)** संसार में सुखी व्यक्ति वह है जो आनंदपूर्ण जीवन व्यतीत कर रहा है और जो व्यक्ति सुखी नहीं है, जिसके जीवन में आनंद नहीं है वहीं व्यक्ति कबीर के अनुसार दुःखी व्यक्ति है।

यहाँ सोने का अर्थ अज्ञानता की नींद से है और जागना ज्ञान से युक्त होने का प्रतीक है। इसका प्रयोग कबीर ने 'साखी' में अर्थ, सौंदर्य एवं संसार की नश्वरता, ईश्वर भक्ति के लिए किया है। **[2]**

(ख) कंपनी बाग में रखी तोप हमें यह सीख देती है कि जो वर्तमान है वह आगे चलकर भूतकाल में बदल जाएगा और वह कल एक इतिहास के रूप में कहलाएगा। शक्तिशाली कल के परिवर्तित होने पर कल उसी प्रकार

कमजोर (निर्बल) हो जाएगा जिस प्रकार शक्तिशाली तोप आज कमजोर रूप में कंपनी बाग के प्रवेश द्वार पर बच्चों व पक्षियों के मनोरंजन का केंद्र बनी हुई है। **[2]**

(ग) व्यक्ति को निडर होकर, मनुष्यता के भाव से युक्त होकर, महापुरुषों के जीवन से प्रेरणा लेकर, उदार, परोपकारी व्यक्ति के समान अभिमानरहित, सभी मनुष्यों को अपना बंधु मानते हुए व सद्कर्म करते हुए जीवन व्यतीत करना चाहिए। **[2]**

(घ) कबीर के अनुसार पुस्तकीय ज्ञान व्यर्थ है। इसे पढ़कर कोई भी व्यक्ति ज्ञानी नहीं बन सकता। इसी तरह मूँड़ मुँडाना, राम-नाम का जप करना आदि भी व्यर्थ है। राम के ज्ञान के बिना इनका कोई मूल्य नहीं है। **[2]**

10. मीराबाई श्री कृष्ण को पाने के लिए निम्न कार्य करने को तैयार हैं-

(i) मीराबाई श्री कृष्ण के यहाँ चाकरी (नौकरी) करने के लिए तैयार हैं।

(ii) मीराबाई चाकर के रूप में बाग लगाएँगी और प्रातः काल आवाज लगाकर श्री कृष्ण का दर्शन करेंगी।

(iii) वृंदावन की गलियों में गोविंद की लीलाओं को गाकर सुनाएँगी।

(iv) मीराबाई वृंदावन में गायें भी चराने के लिए तैयार हैं। **[5]**

अथवा

सुमित्रानंदन पंत कल्पना लोक के कवि रहे हैं। उनकी कल्पनाएँ अत्यंत मनोरम हैं। उन्होंने प्रस्तुत कविता में भी प्रकृति को मानव की तरह क्रिया करते हुए दिखाया है। उन्होंने पहाड़ को अपनी शक्ल निहारता, पेड़ को अपनी उच्चाकांक्षा-सा चिंतन मुद्रा में खड़ा, झरने को गौरव-गाथा गाता हुआ, शाल के वृक्षों को भय से धँसा हुआ, बादलों को पारे के समान चमकीले पंखों को फड़फड़ाकर उड़ता हुआ और आक्रमण करता हुआ दिखाया है। पंत जी की ये सभी कल्पनाएँ गतिशील, नवीन तथा मौलिक हैं।

11. (क) 'हरिहर काका' कहानी के प्रमुख पात्र हरिहर काका सब कुछ होते हुए भी एक यंत्रणापूर्ण जीवन जी रहे थे। उनके पास 15 बीघे जमीन थी। उससे होने वाली आय से एक भरे-पूरे परिवार का गुजारा आराम से हो सकता था परंतु अकेले होने के कारण वे दूसरों पर निर्भर हो गए। उनके भाई उनकी जमीन की उपज का लाभ तो लेते थे, पर उनकी पत्नियाँ हरिहर काका की ज़रूरतों का ध्यान नहीं रखती थीं जिनके कारण उनका जीवन अत्यंत यंत्रणापूर्ण व्यतीत हो रहा था। उनको (हरिहर काका को) इस यंत्रणा से मुक्ति दिलाने के लिए मैं उनसे कहता कि वह अपनी जमीन बँटाई पर दे दें तथा स्वयं अपनी आय से शांतिपूर्ण जीवन व्यतीत करें। **[3]**

(ख) स्कूल की पिटाई का डर भुलाने के लिए लेखक सोचा करता था कि स्काउटिंग के अभ्यास के दौरान नीली-पीली झंडियाँ तथा गले में पड़े दो रंगे रूमाल कैसे अच्छे लगते थे, ऐसा लगता था कि फौज के सिपाही हैं। पी. टी. साहब का डिसीप्लिन में प्राप्त गुडबिल आज भी काम आ रहा है। जब पी. टी. सर शाबाश कहते थे तो बहुत अच्छा लगता था ऐसा प्रतीत होता था जैसे कोई चमत्कार हो गया है। हेडमास्टर जी सीधे-साधे बिल्कुल विपरीत स्वभाव के थे। लेखक को अपने साथियों के साथ मस्ती करना बड़ा ही अच्छा लगता था। अब तो सिर्फ सोचना ही रह गया है। अनुशासन जीवन को नियमित बनाता है। अब तो सब कुछ अच्छा लगता है। **[3]**

खंड 'घ' लेखन

26 अंक

12. (क) शिक्षा का गिरता स्तर

गांधी जी कहते थे- ''शिक्षा से मेरा अभिप्राय है बच्चे की संपूर्ण शारीरिक, मानसिक एवं आध्यात्मिक शक्तियों का सर्वांगीण विकास। साक्षरता न तो शिक्षा का अंत है और न आरंभ।'' अरविंद लिखते हैं- ''शिक्षा का कार्य आत्मा को विकसित करने में सहायता देना है।''

दुर्भाग्य से आज की शिक्षा का स्तर बहुत गिर चुका है। आज के विद्यालय छात्रों को आजीविका और पाठ्यक्रम की शिक्षा देते हैं। पाठ्यक्रम में छात्र के मानसिक, बौद्धिक और आध्यात्मिक विकास को कोई महत्व नहीं दिया जाता। इसलिए वे न तो समाज-सेवा की ओर ध्यान देते हैं और न ही अध्यात्म को किसी काम की चीज मानते हैं। वे पैसा कमाने की मशीन तो बन जाते हैं किंतु अच्छे आदमी भी हों, इसकी कोई गारंटी नहीं।

वर्तमान शिक्षा केवल बौद्धिक श्रम को महत्व देती है। प्रतियोगिताओं में परीक्षा इस बात की होती है कि कौन कितनी सूचनाओं को एक साथ ढो सकता है। जिसने तकनीक का अच्छा अभ्यास किया होता है, वही प्रतियोगिता जीत लेता है। इस प्रवृति का बुरा परिणाम यह हो रहा है कि समाज-सेवा या प्रशासन में भी ऐसे लोग जा रहे है जिन्होंने न कभी समाज-सेवा की और न जिन्हें सेवा के संस्कार मिले। बस वे नौकरी में जाते ही पैसा कमाने की होड़ करने लगते हैं। 'सेवा', 'विकास', 'अच्छा इंसान', 'आत्मा का विकास' आदि शब्द उन्हें व्यर्थ प्रतीत होने लगते हैं।

आज पैसा ही भगवान हो गया है। पैसे वाले को ही शरीफ, धनी को ही 'भले घर का' माना जाता है। यही कारण है कि सब लोगों का लक्ष्य पैसा कमाना हो गया है। यदि त्यागी-तपस्वी को सम्मान मिलता होता, तो लोग इस दिशा में भी बढ़ते। भले और भोले इंसान को आज मूर्ख माना जाता है।

परंपरागत व्यवसायों के नष्ट होने से भी शिक्षा का स्तर गिरा है। जब से औद्योगिकीकरण शुरू हुआ है, नई तरह के प्रशिक्षित कर्मचारियों का निर्माण करने की ज़िम्मेदारी शिक्षा पर आ पड़ी है। मैकाले को कंपनी का शासन चलाने के लिए भारतीय क्लर्कों की जरूरत थी। उसने ऐसी ही शिक्षा पद्धति शुरू की। परंतु आज यह समझना चाहिए कि मनुष्य शरीर ही नहीं, आत्मा भी है। अतः उसकी आत्मिक शक्तियों को भी विकसित किया जाना चाहिए तभी शिक्षा अपने लक्ष्य को पूरा कर सकेगी। **[6]**

(ख) मेरा आदर्श अध्यापक

बचपन से अब तक मैं अनेक अध्यापकों के संपर्क में आया हूँ। प्रायः सभी ने मुझे प्रभावित किया है। परंतु जब मैं अपने आदर्श अध्यापक की खोज करने निकलता हूँ तो मुझे श्री विजयेंद्र जैन का स्मरण हो जाता है।

श्री विजयेंद्र जैन की सबसे बड़ी खूबी यही है कि वे सब विद्यार्थियों से मित्रवत स्नेह रखते हैं। वे उनके जीवन निर्माण में पूरी रुचि लिया करते हैं। वे छात्र को अपने पास बुलाकर उसमें अद्भुत प्रेरणा भर दिया करते हैं।

श्री विजयेंद्र जैन स्वभाव से ही सहयोगी हैं। उनकी आदत हैं कि वे छात्रों को भिन्न-भिन्न क्षेत्रों में जाने के लिए प्रोत्साहित किया करते हैं। आज के युग में छात्रों के लिए इतना करने वाले अध्यापक ढूँढ़ने से भी नहीं मिलते। उनके सभी छात्र उनके प्रशंसक हैं।

श्री विजयेंद्र जैन वनस्पतिशास्त्र के अध्यापक हैं। वे अपने विषय में पारंगत हैं। वे अपने विषय को कुशलतापूर्वक पढ़ाया करते हैं। उनका पढ़ाने का ढंग अत्यंत सरल तथा विनम्र है। वे विषय को बातचीत की शैली में समझाया करते हैं। श्री जैन स्वयं बहुत अध्ययनशील हैं। खाली समय में हम उन्हें अध्ययन करता हुआ ही देखते हैं।

श्री जैन गंभीर और अनुशासनप्रिय व्यक्ति हैं। वे कभी फालतू बातें नहीं किया करते हैं। उनका एक-एक शब्द तुला हुआ होता हैं। सभी छात्र उनके वचनों का सम्मान करते हैं। जैसे वे खुद मितभाषी हैं, वैसे ही वे छात्रों से अपेक्षा किया करते हैं। वे अपने जीवन में अत्यंत अनुशासित हैं। वे कक्षा में कभी देरी से नहीं आते। उन्होंने कभी बिना पढ़ाए कक्षा नहीं छोड़ी।

श्री विजयेंद्र जैन सादगी, दृढ़ता और सच्चाई की मूर्ति हैं। उनका पहनावा सादा है। बच्चे उनकी सादगी पर मोहित हैं। शायद ही हमारा ध्यान कभी उनके वस्त्रों पर गया हो। उनके मन में सच्चाई का वास है। उन्होंने कभी नकल को प्रोत्साहन नहीं दिया। कितने ही छात्र उनके करीब हैं, परंतु किसी ने उनके सामने नकल करने की हिम्मत नहीं की। वे मेरे प्रेरणास्त्रोत हैं। **[6]**

(ग) ओलंपिक खेलों में भारत

भारत ने 1920 के ओलंपिक खेलों में पहली बार भाग लिया था। 1928 के ओलंपिक में हमने हॉकी में स्वर्ण पदक प्राप्त किया। उसके बाद 1932, 1936, 1948, 1952, 1956, 1964 और 1980 के ओलंपिकों

में हॉकी में यह दबदबा कायम रहा। भारत के कप्तान ध्यानचंद को 'हॉकी का जादूगर' कहा जाता है। 1968 व उसके बाद से ही इस खेल पर काले बादल छाने लगे। 2008 के चीन ओलंपिक में तो भारतीय हॉकी टीम क्वालीफाई ही नहीं कर पाई।

व्यक्तिगत खेलों में सन 1952 में पहली बार के. डी. जाधव ने हेलसिंकी ओलंपिक में कुश्ती में कांस्य पदक प्राप्त किया था। उसके 56 साल बाद 2008 के बीजिंग ओलंपिक में दिल्ली के सुशील कुमार ने फ्री-स्टाइल कुश्ती के 66 किलोग्राम वर्ग में कांस्य पदक प्राप्त किया।

भारत को टेनिस का एकमात्र कांस्य पदक 1996 के ओलंपिक में प्राप्त हुआ था। भारोत्तोलन में भी भारत ने इकलौता कांस्य पदक प्राप्त किया है। मुक्केबाजी के क्षेत्र में भारत ने 2008 के ओलंपिक में पहली बार दस्तक दी है।

निशानेबाजी का खेल पिछले दो ओलंपिकों में भारत के लिए फलदायी सिद्ध हुआ है। 2004 के ओलंपिक में राजस्थान के राज्यवर्द्धन सिंह राठौर ने डबल ट्रैप निशानेबाजी में रजत पदक प्राप्त किया था। 2008 में पंजाब के अभिनव बिंद्रा ने 10 मीटर एयर रायफल स्पर्द्धा में स्पर्णपदक प्राप्त करके भारत के लिए नया इतिहास रच दिया है। एकल स्पर्धा में वे पहला स्वर्णपदक जीतने वाले पहले और अकेले यशस्वी निशानेबाज खिलाड़ी हो गए हैं। उन्होंने निराशा में डूबे भारत के लिए आशा की किरण जगाई है। आशा है, भारत के उभरते हुए खिलाड़ी इस परंपरा को और अधिक बढ़ाएँगे।

यह सच है कि भारत जैसे विशाल देश के लिए दो-तीन पदक ऊँट के मुँह में जीरा भी नहीं हैं। 2012 में 12 खेलों के लिए 56 खिलाड़ियों का एक दल बीजिंग ओलंपिक में गया था। उसमें से एक स्वर्ण और एक कांस्य पदक प्राप्त हुआ है। यह परिणाम बहुत आशाजनक न होते हुए पिछले सालों की तुलना में प्रेरणादायी है। **[6]**

13. सेवा में,

संपादक महोदय

अमर उजाला,

मोहकमपुर,

दिल्ली रोड, मेरठ।

विषय- 'हिंसा प्रधान फिल्मों का समाज पर पड़ता दुष्प्रभाव।'

महोदय,

मैं आपके लोकप्रिय समाचार-पत्र के माध्यम से सरकार और समाज का ध्यान हिंसा प्रधान फिल्मों के दुष्प्रभाव की ओर दिलाना चाहती हूँ, जिससे इनके विरुद्ध जनमत तैयार किया जा सके। आजकल दूरदर्शन के विभिन्न चैनलों पर हिंसा प्रधान फिल्मों और सीरियलों का खुले आम प्रदर्शन किया जा रहा है। समाज में तेजी से फैलती अनैतिकता और हिंसा इसी का परिणाम है। हमारी भारतीय फिल्में तथा भारतीय चैनल यह कार्य बहुत आसानी से कर रहे हैं। यही कारण है कि युवा वर्ग इनकी ओर आकृष्ट हो रहा है और उसका परिणाम भी सामने दिखाई दे रहा है। यदि इस प्रवृति को समय रहते नहीं रोका गया, तो आने वाला समय बहुत भयंकर होगा। मैं इस पत्र के माध्यम से सरकार के 'सूचना एवं प्रसारण मंत्रालय' से यह निवेदन

करती हूँ कि वह अपनी प्रसारण नीति में आवश्यक संशोधन करें, ताकि समाज में हिंसा फैलाने वाली फिल्मों और अन्य कार्यक्रमों पर लगाम लगाई जा सके।

धन्यवाद

भवदीय

रीना गुप्ता

ट्रांसपोर्ट नगर, मेरठ। **[5]**

अथवा

सेवा में,
स्वास्थ्य अधिकारी
दिल्ली नगर निगम,
नई दिल्ली

विषय- पेयजल की समस्या के संबंध में

महोदय,

इस पत्र के माध्यम से मैं आपका ध्यान पूर्वी दिल्ली में पेयजल की समस्या की ओर आकर्षित करना चाहता हूँ। पूर्वी दिल्ली के विभिन्न में क्षेत्रों में पेयजल का अभाव होने के कारण सार्वजनिक नलों तथा पेयजल वाहनों के निकट भारी भीड़ जमा हो रही है। इसका कारण सुबह के समय मात्र एक घंटे के लिए पानी का आना है। ऊपरी मंजिल पर पानी नहीं पहुँचने से समस्या और अधिक बढ़ गई है। सुबह के समय आने वाला पानी भी गंदा तथा अशुद्ध होता है। अतः आपसे अनुरोध है कि शीघ्र स्थिति का मूल्यांकन करें और पेयजल की समस्या से निपटने के लिए आवश्यक कदम उठाएँ।

धन्यवाद

भवदीय

रोहित खन्ना।

15.

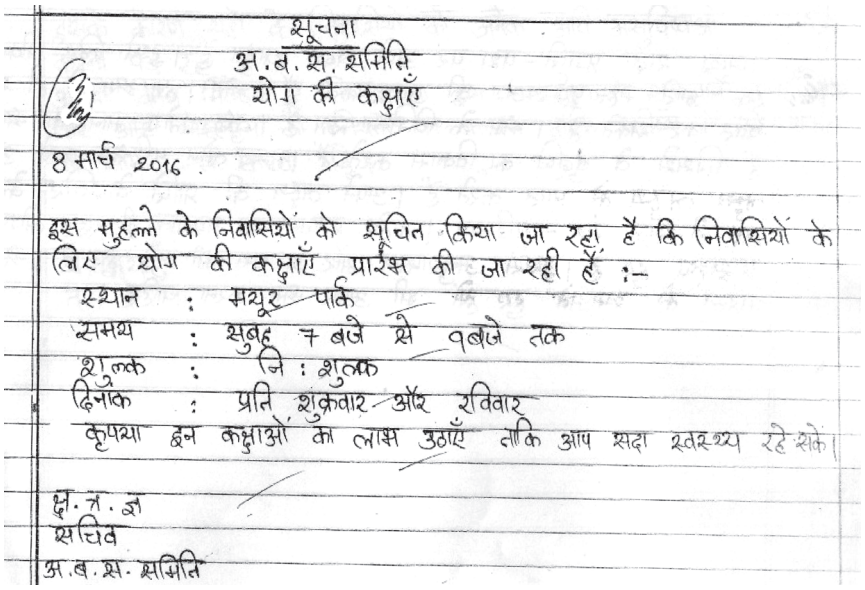

सूचना
अ.ब.स. समिति
योग की कक्षाएँ

8 मार्च 2016

इस मुहल्ले के निवासियों को सूचित किया जा रहा है कि निवासियों के लिए योग की कक्षाएँ प्रारंभ की जा रही हैं :-

स्थान : मयूर पार्क
समय : सुबह 7 बजे से 9 बजे तक
शुल्क : नि : शुल्क
दिनांक : प्रति शुक्रवार और रविवार

कृपया इन कक्षाओं का लाभ उठाएँ ताकि आप सदा स्वस्थ्य रह सकें।

क्ष. त्र. ज्ञ
सचिव
अ.ब.स. समिति

(सी.बी.एस.ई. टॉपर उत्तर, 2016) [5]

अथवा

सरस्वती विद्या मंदिर, रुनकता, आगरा

दिनांक..... **सूचना**

विद्यालय के समस्त विद्यार्थियों की सुरक्षा व अनुशासन को बनाए रखने के लिए यह सख्त आदेश दिए जाते हैं कि पूरी छुट्टी होने से पहले किसी विद्यार्थी को विद्यालय परिसर से बाहर जाने की अनुमति नहीं है। सभी विद्यार्थियों व अभिभावकों का सहयोग अपेक्षित है।

डॉ. मोहिनी अग्रवाल

प्रधानाचार्या

15. पिता व पुत्र के मध्य संवाद

पिता – राकेश, स्कूटी लेकर कहाँ जा रहे हो? तुम्हारा हेलमेट कहाँ है?

राकेश – पिताजी, ज़रा अपने दोस्त से किताब लेने जा रहा था। उसका घर पास ही है। हेलमेट की क्या जरूरत? वैसे भी मेरी स्कूटी बैटरी वाली है।

पिता – बेटा, दुर्घटनाएँ सूचना देकर नहीं घटतीं। वाहन कोई भी हो, यातायात नियमों का पालन करना जरूरी है। हेलमेट पहनने से हमारी खुद की ही सुरक्षा होती है।

राकेश – पिताजी, आप चिंता न करें मैं बस अभी आया।

पिता – तुम रोज़ सड़क पर बढ़ती जा रही दुर्घटनाओं के बारे में सुनते हो, फिर भी लापरवाही कर रहे हो। ऐसे ही एक-दूसरे को देखकर सब गलत काम करते हैं और घटनाओं को बुलावा देते हैं।

राकेश – आप कहते हैं तो मैं हेलमेट पहन लेता हूँ।

पिता – सिर्फ मेरे कहने से या मेरे सामने नहीं, हमेशा याद रखो। कोई भी ऐसा काम मत करो कि बाद में पछताना पड़े।

राकेश – माफ कीजिए, पिताजी मैं हमेशा ध्यान रखूँगा। **[5]**

अथवा

दो मित्रों के बीच संवाद-

अशोक – हैलो दीपक! कहाँ रहते हो मित्र, काफी दिनों बाद दिख रहे हो।

दीपक – दरअसल, मैं किसी महत्वपूर्ण काम से काफी दिनों से शहर के बाहर गया हुआ था।

अशोक – चलो अच्छा हुआ, अब लौट आए, ठीक मतदान से कुछ दिन पहले।

दीपक – हाँ, हाँ, मैं तो स्वयं चाहता था कि मतदान से पहले काम पूरा करके वापस आ जाऊँ, क्योंकि दूसरी जगह मैं मतदान नहीं कर पाता।

अशोक – यदि तुम्हारा काम पूरा नहीं होता तो तुम मतदान करने नहीं आते?

दीपक – वास्तव में.....

अशोक – हम लोग पढ़े-लिखे होकर भी मतदान के महत्व को नहीं जानते। अपनी सुविधाओं को अधिक प्राथमिकता देते हैं और मतदान को कम।

दीपक – अशोक, आज तुमने चेतना जागृत कर दी। अब मैं जीवन में कभी भी अपने मतदान के अधिकार को यूँ ही व्यर्थ नहीं जाने दूँगा। धन्यवाद मित्र!

16.

विद्यार्थियों की पहली पसंद

स्टार नोट-बुक्स **स्टार नोट-बुक्स**

स्टार नोट-बुक्स की खूबियाँ

गुणवत्तायुक्त कागज

पुनः उपयोगी और इकोफ्रेंडली कागज़ का प्रयोग

सभी आकार में उपलब्ध

उचित मूल्य

स्टार नोट-बुक्स खरीदने के लिए अपने नज़दीकी पुस्तक विक्रेता से संपर्क करें। **[5]**

अथवा

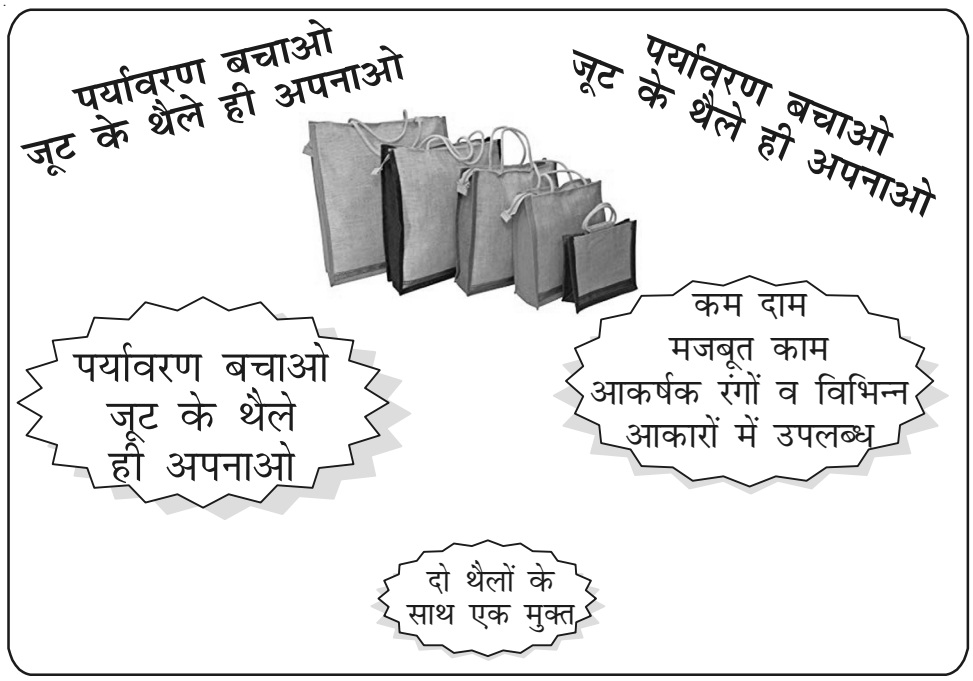

• •

हिंदी 'ब'

प्रतिदर्श प्रश्न-पत्र

उत्तरमाला

10

सी.बी.एस.ई, कक्षा X

खंड 'क' अपठित बोध

10 अंक

1. (क)
- जन्मजात अहंकार के कारण
- अपनी कमियों को अनदेखा कर दूसरों की कमियों पर ध्यान देकर। **(सी.बी.एस.ई. अंक योजना, 2015) [2]**

व्याख्यात्मक हल: जन्मजात अहंकार के कारण मनुष्य की दृष्टि दूसरों के दोषों पर टिकी रहती है, इसीलिए वह अपनी कमियों को अनदेखा कर दूसरों की कमियों पर ध्यान देता है और अपना सारा जीवन ऐसे ही व्यतीत कर देता है।

(ख)
- दूसरे की उन्नति को सहन न करना (जलना)
- समय, स्वास्थ्य और सद्वृत्तियों के लिए विनाशकारी **(सी.बी.एस.ई. अंक योजना, 2015) [2]**

व्याख्यात्मक हल: दूसरे की उन्नति को सहन न करना ही ईर्ष्या कहलाता है, ऐसा व्यक्ति अपना बहुमूल्य समय, अपना स्वास्थ्य तथा वह अपनी सद्वृत्तियों के विनाश का कारण बनता है।

(ग)
- स्वयं की कमियों और दुर्गुणों को पहचानने की प्रक्रिया मनुष्य के लिए कष्टकारी है।
- अपनी कमियाँ मनुष्य को दु:खी करती हैं इसलिए वह दूसरों के दोषों को ढूँढकर अपना दु:ख कम करना चाहता है। **(सी.बी.एस.ई. अंक योजना, 2015) [2]**

व्याख्यात्मक हल: मनुष्य अपनी कमियों और दुर्गुणों को पहचान नहीं पाता, यही प्रक्रिया उसके लिए कष्टकारी होती है, क्योंकि मनुष्य की स्वयं की कमियाँ ही उसे दु:खी करती हैं इसीलिए वह दूसरों के दोषों को ढूँढकर अपना दु:ख कम करना चाहता है।

(घ)
- आत्मनिरीक्षण को
- आत्मनिरीक्षण द्वारा मनुष्य अपनी बुराईयों को पहचानकर उनसे मुक्ति प्राप्त कर सकता है। **(सी.बी.एस.ई. अंक योजना, 2015) [2]**

व्याख्यात्मक हल: विवेकशील व्यक्ति आत्मनिरीक्षण को अच्छा मानते हैं क्योंकि आत्मनिरीक्षण द्वारा व्यक्ति अपनी सब बुराईयों को पहचानकर उनसे मुक्ति प्राप्त कर सकता है; इसीलिए आत्मनिरीक्षण को श्रेयस्कर माना गया है।

(ङ)
- आत्मनिरीक्षण, विवेकशीलता, कर्मशीलता, सद्भाव, सदाचार आदि सद्प्रवृतियाँ।
- अहंकार, ईर्ष्या पर-छिद्रान्वेषण, दुर्गुणों का प्रसार आदि दुष्प्रवृतियाँ।

(प्रत्येक की किन्हीं दो प्रवृतियों का उल्लेख अपेक्षित) **(सी.बी.एस.ई. अंक योजना, 2015) [1]**

(च) मनषियों की गंभीर वाणी सदैव अपने दोषों को ढूँढने का उपदेश देती है। इस व्यवहार में वे ज्ञानी व्यक्ति ही आते हैं जो अपने विषय में कटुसत्यों का सामना करने को तत्पर रहते हैं।

खंड 'ख' व्यावहारिक व्याकरण 16 अंक

2. वर्णों के सार्थक समूह को शब्द कहते हैं।
व्याकरणिक नियमों में बँधकर वाक्य में प्रयुक्त शब्द पद बन जाता है।
शब्द- कमल, पद- कमल सुंदर फूल है। [1]
(अन्य उपयुक्त उदाहरण भी स्वीकार्य हैं।) **(सी.बी.एस.ई. अंक योजना, 2015)**

3. **(क)** मिश्र वाक्य [1]
(ख) नदी में बाढ़ आती है इसलिए / और गाँव के लोग परेशान हो जाते हैं। [1]
(ग) सोने वाला खोता है। **(सी.बी.एस.ई. अंक योजना, 2015)** [1]

4. **(क)** **(i)** दिन और रात - द्वंद्व समास [1]
(ii) भारत के वासी - तत्पुरुष समास [1]
(ख) **(i)** सुंदर चित्र - कर्मधारय समास [1]
(ii) हस्तलिखित - तत्पुरुष समास [1]

5. **(क)** तुम अपना काम करो। [1]
(ख) मुझे नहाना है। [1]
(ग) तुमने उससे क्या बोला? / (कहा?) [1]
(घ) अब तो हमें देखना है। [1]

6. **अपने पैरों पर खड़ा होना** (स्वावलंबी होना) - बेटे का विवाह तभी करना चाहिए जब वह अपने पैरों पर खड़ा हो जाए। [1]
ढेर हो जाना (मर जाना) - भारतीय सैनिकों ने चार आतंकवादियों को ढेर कर दिय। [1]
आस्तीन का साँप (धोखेबाज मित्र) - राघवेंद्र के मित्र मोहन ने उसकी सारी संपत्ति हड़प ली। वह तो आस्तीन का साँप है। [1]
खाक छानना (व्यर्थ इधर-उधर घूमना) - नौकरी न मिलने पर मोहित छाक छानता फिर रहा है। [1]

खंड 'ग' पाठ्यपुस्तक तथा पूरक पाठ्यपुस्तक 28 अंक

7. **(क)** राष्ट्रीय ध्वजारोहण कार्यक्रम का विरोध पुलिस एवं प्रशासन कर रहा था और इस कार्यक्रम को रोकने के लिए शहर के प्रत्येक मोड़ पर गोरखे और सारजेंट तैनात किए गए थे। ट्रैफिक पुलिस को भी घुड़सवार पुलिस के साथ इसी काम पर लगा दिया गया था। [2]

(ख) उक्त कथन द्वारा लेखक ने स्पष्ट किया है कि मानव की बढ़ती महत्वाकांक्षाएँ कभी न समाप्त होने वाली इच्छाएँ, बढ़ती आबादी की आवश्यकता हेतु पेड़ों की कटाई, जंगलों का सफाया, जंगली जानवरों का शिकार तथा प्रकृति के साथ अनावश्यक छेड़-छाड़ आदि से पशु-पक्षी बेघर हो गए हैं। साथ ही मनुष्य ने अपने दुर्भाग्य को भी निमंत्रण दिया है। अत: मनुष्यों को प्रकृति को संतुलित करने वाले कार्यों से तथा बुरे कर्मों से बचना चाहिए। [2]

(ग) बड़े भाई साहब द्वारा लेखक को डाँटने का यह कारण था कि लेखक पढ़ाई के प्रति लापरवाह था। [2]

(घ) लेखक ने ग्वालियर से मुंबई तक अनेक बदलाव देखे। उसने पाया कि जंगल कट गये। पशु-पक्षी शहर छोड़ कर कहीं भाग गए हैं और जो भाग नहीं सके वे दुर्गति और उपेक्षा सह कर जी रहे हैं। [2]

8. लेखक के अनुसार सत्य केवल वर्तमान है, उसी में जीना चाहिए। लेखक ने ऐसा इसलिए कहा होगा, क्योंकि जब वह जापान में अपने मित्र के साथ टी-सेरेमनी में गया तो चाय की चुस्कियों के मध्य दिमाग की रफ्तार थोड़ा कम होने लगी तो उसे ऐसा अनुभव हुआ। हम हमेशा बीते-दिनों की खट्टी-मीठी यादों में उलझे रहते

है या भविष्य के रंगीन सपने देखते रहते हैं। हम या तो भूतकाल में रहते या भविष्य काल में पर वास्तव में हमारे सामने जो वर्तमान है, वही सत्य है, हमें उसी में जीना चाहिए। [5]

अथवा

सुभाष बाबू के जुलूस में स्त्रियों का विशेष सहयोग था। गुजराती सेविका संघ के जुलूस में पुलिस ने बहुत-सी लड़कियों को गिरफ्तार किया था। मारवाड़ी बालिका विद्यालय ने झंडा उत्सव मनाया। स्त्रियाँ जुलूस निकालकर निश्चित स्थान पर पहुँचने की कोशिश कर रही थीं। लाठीचार्ज की परवाह किए बिना स्त्रियाँ बड़ी तादात में मोन्युमेंट में पहुँचीं और उसकी सीढ़ियों पर चढ़कर झंडा फहराया और घोषणा पढ़ी। पुलिस द्वारा गिरफ्तार कर लाल बाज़ार भेजने पर भी उनका उत्साह कम नहीं हुआ। वहाँ लगभग 105 स्त्रियों को गिरफ्तार किया गया।

9. (क) मीरा कृष्ण के लिए कुसुंबी साड़ी इसलिए पहनना चाहती है क्योंकि मीरा स्वयं को पीतांबरी धारण करने वाले कृष्ण के समक्ष (सामने) जोगन के रूप में प्रस्तुत करना चाहती है। कुसुंबी साड़ी जोगन मीरा के अनुकूल है क्योंकि कुसुंबी का अर्थ है- गहरा लाल। [2]

(ख) पहाड़ों से बादल अचानक इतने भयानक और विशाल आकार में गरजते हुए ऊपर उठते हैं कि ऐसा लगता है कि जैसे कोई पहाड़ बादल रूपी पंख फड़-फड़ाकर आकाश में उड़ गया हो और थोड़ी ही देर में बादल इस तरह धरती पर बरस पड़ते हैं मानों आकाश ने धरती पर आक्रमण कर दिया हो। तब ऐसा प्रतीत होता है कि शाल के पेड़ डर के मारे धरती में धँस गए हों और तालाब से धुआँ उठने लगा हो। [2]

(ग) बिहारी के दोहे के आधार पर - साँप व मोर, हिरन व शेर आदि प्राणियों में स्वाभाविक बैर का भाव है पर ग्रीष्म ऋतु की तपन व तपस्वी जनों की तपस्या के प्रभाव से वे जीव-जंतु आपसी व स्वाभाविक बैर को भूल जाते हैं। [2]

(घ) 'मनुष्य मात्र बंधु है' से तात्पर्य है कि पृथ्वी पर निवास करने वाले समस्त मानव प्राणी मनुष्य हैं जो बंधुत्व (भाई) भावना से युक्त हैं- यही सबसे बड़ा ज्ञान है - उदाहरणार्थ संकट से ग्रस्त, आपदा से युक्त होने पर हम परिचित अपरिचित व्यक्ति की सहायता करते हैं यही मनुष्य मात्र के प्रति बंधुत्व भाव है। [2]

10. 'आत्मत्राण' कविता में कवि ने किसी सहायक पर निर्भर न रहने की बात इसलिए कही है कि यदि ऐसी परिस्थिति आ जाए कि कोई सहायक न मिले तो भी उसमें आत्मबल, हिम्मत-साहस और बल तथा पौरुष बना रहे क्योंकि कवि स्वावलंबी है और वह अपने बल-बूते जीवन में आने वाली सभी बाधाओं और विपत्तियों का सामना करना चाहता है। 'आत्मत्राण' का अर्थ है- स्वयं अपनी सुरक्षा करना। इस कविता में कवि ईश्वर से सहायता नहीं माँगता, ईश्वर को हर दु:ख से बचाने के लिए नहीं पुकारता। वह स्वयं अपने दु:ख से बचने और उसके योग्य बनना चाहता है इसके लिए वह केवल स्वयं को समर्थ बनाना चाहता है। [5]

अथवा

पर्वत-प्रदेश में वर्षा ऋतु में प्राकृतिक सौंदर्य तो कई गुना बढ़ जाता है जैसे हरियाली का बढ़ जाना, फल-फूल का बढ़ना व खेती तैयार होना, परंतु इस ऋतु में पहाड़ों पर जीवन व्यतीत करने वालों के लिए कई समस्याएँ उत्पन्न हो जाती हैं- जैसे वर्षा के कारण पहाड़ों की भूमि फिसलन भरी हो जाना व गिरने का खतरा बढ़ जाना तथा चट्टानों का अपक्षय होना व उनका टूटकर गिरना। परिणामस्वरूप जान-माल का बहुत अधिक नुकसान होना, वर्षा के कारण पहाड़ों की मिट्टी का फैलना तथा बादल फटने से भयंकर बाढ़ आना तथा जंगलों में कीचड़ व दलदल बन जाना जिसका अंदाजा लगाना भी मुश्किल होता है। इस तरह की विभिन्न कठिनाइयों का पहाड़ी लोगों को सामना करना पड़ता है।

11- (क) हरिहर काका के गाँव में यदि मीडिया की पहुँच होती तो काका की स्थिति महत्वपूर्ण पात्र की होती। वे समाचार-पत्र की सुर्खियों में होते और दूरदर्शन के माध्यम से वे ख्याति अर्जित कर लेते तथा उनकी सहायता करने के लिए समाज सेवी-संस्थाएँ, राजनैतिक पार्टियाँ भी आगे आ जातीं। देश-प्रदेश में हरिहर काका से

संबंधित समाचार सुनाई देते, उनके साथ क्रूरतापूर्ण अमानवीय व्यवहार करने वाले महंत एवं परिवारीजन कानून की दृष्टि से अपराधी के रूप में जेल में होते। हर समाचार एजेंसी हरिहर काका से मिलने और उनका साक्षात्कार छापने के लिए उनके गाँव में घूम रही होती। **[3]**

(ख) जब टोपी ने खाने के दौरान 'अम्मी' शब्द कहा तो खाना खाते हुए सबके हाथ अचानक वहीं थम गए। अन्य हिंदू परिवारों की तरह टोपी का परिवार भी उर्दू के संबोधनों से परहेज करता था। उन्हें ऐसा लगा जैसे खाने की मेज़ पर कोई ऐसा भोज्य पदार्थ रख दिया गया हो जो शुद्ध शाकाहारियों के खाने के योग्य न हो। उन्होंने अटकलें लगाईं और फिर टोपी से यह सच्चाई जान ही ली कि क्या उसकी दोस्ती एक मुस्लिम लड़के से है? तब उसकी माँ ने पीट-पीटकर कुबूलने को कहा कि वह आगे से कभी उससे नहीं मिलेगा, लेकिन टोपी किसी भी कीमत पर यह बात कबूलने के लिए तैयार नहीं हुआ। **[3]**

खंड 'घ' लेखन

26 अंक

12. (क) पराधीन सपनेहुँ सुख नाही

पराधीनता जीवन का सबसे बड़ा दु:ख है। पराधीन व्यक्ति को निंदा में भी विश्राम नहीं मिलता। पराधीनता की विवशता को प्रकट करने वाली ये पंक्तियाँ तुलसीदास ने 'रामचरितमानस' में लिखी हैं जिसमें अप्रत्यक्ष रूप से मनुष्य को स्वाधीनता की प्रेरणा दी गई है। संस्कृत में भी कहा गया है-

''पारतन्त्रयं महादु:खम् स्वातन्त्रयं परन्तम् सुखम्।''

दूसरों की कृपा एवं दासता की बेड़ियों में पलने वाला व्यक्ति सदैव दूसरों का मुँह जोहता रहता है। ऐसे पराधीन व्यक्ति की कोई इच्छा रह ही नहीं जाती। वह तो जड़वत सिर झुकाए दूसरों की आज्ञा का पालन करता हुआ जीता है। यह दु:ख कितना असह्य होता है, इसे वही जानता है जो इसे भोगता है।

पराधीनता अकर्मण्यता को जन्म देती है। ऐसे व्यक्ति में बौद्धिक शक्ति का ह्रास हो जाता है। परतंत्रता चाहे व्यक्तिगत हो अथवा जाति या देश की हो, सभी स्तरों पर असह्य है। व्यक्तिगत स्वतंत्रता में व्यक्ति विशेष का शोषण होता है, परंतु जाति या देशगत परतंत्रता में एक बड़े समूह का शोषण होता है।

तिलक ने नारा लगाया था- ''स्वतत्रता हमारा जन्मसिद्ध अधिकार है।'' उसको पाने के लिए नेताजी सुभाषचंद्र बोस ने देशवासियों से पुकार की थी - **''तुम मुझे खून दो, मैं तुम्हें आजादी दूँगा।''** क्यों खून देकर भी हम अपनी आजादी पाना चाहते हैं ? क्यों कष्ट सहकर भी हम आजादी में जीना चाहते हैं? इसका कारण है कि आजादी में हमारी साँसों पर कोई बंधन नहीं होता, हमें अपने अनुरूप जीने का अधिकार होता है।

पराधीन व्यक्ति में सोचने की शक्ति समाप्त हो जाती है, उसका मन हार जाता है, उसकी महत्त्वाकांक्षाएँ मर जाती हैं जबकि स्वतंत्र व्यक्ति इन सबको चाहता है। पराधीन प्राणी तो एक यंत्र के समान होता है जो दूसरों के संचालन पर काम करता है। अधिकार का तो वहाँ प्रश्न ही नहीं उठता।

कहा जाता है कि स्वर्ग मनुष्य की अंतिम अभिलाषा है। बुरे से बुरा व्यक्ति भी नरक की यातना नहीं भोगना चाहता। निश्चय ही पराधीनता भी नरक की यातना से कम नहीं है। कवि की ये पंक्तियाँ स्मरणीय हैं -

पराधीन जे जन नहिं, स्वर्ग नरक ता हेतु।
पराधीन जे जन, नहिं स्वर्ग नरक ता हेतु।

स्वाधीनता पाने के लिए निस्संदेह, कष्ट झेलने पड़ते हैं। स्वाधीनता बलिदान माँगती है। दिनकर जी लिखते हैं -

''स्वातंत्र्य जाति की लगन, व्यक्ति की धुन है, बाहरी वस्तु यह नहीं, भीतरी गुण है।
नत हुए बिना जो अशनि घात सहती है।
स्वाधीन जगत में वही जाति रहती है।''

[6]

(ख) लोकतंत्र में चुनाव

लोकतंत्र ऐसी शासन-प्रणाली है जिसका सारा कार्यभार स्वयं 'लोक' के कंधों पर होता है। लोकतंत्र की सफलता-असफलता उन लोगों पर निर्भर करती हैं जो कि सरकार चलाते हैं। उन लोगों को चुनना सबसे महत्वपूर्ण कार्य है।

स्वस्थ लोकतंत्र के लिए आवश्यक है कि चुनाव की प्रक्रिया निष्पक्ष, सरल और पारदर्शी हो। आम गरीब लोग भी चुनाव का अंग बन सकें। वे अपने मत का महत्व समझें तथा स्वतंत्र मत से मतदान कर सकें। देखने में आता है कि भारत में 40 से 80 प्रतिशत तक मतदान होता है। चुनाव-प्रणाली में ऐसी व्यवस्था बननी चाहिए कि शत-प्रतिशत लोग मतदान करें। इसके लिए दंड और पुरस्कार की योजना की जानी चाहिए।

स्वतंत्र और निष्पक्ष चुनाव का अर्थ यही है कि चुनाव लड़ना सस्ता, सुरक्षित तथा सर्वसुलभ हो। इसके लिए जटिल कानूनी दाँवपेंच न हों। कोई गरीब समाजसेवी धन के अभाव में भी चुनाव लड़ सकें दूसरी ओर, यह भी सुनिश्चित किया जाना चाहिए कि धन-संपन्न लोग लोभ-लालच़ और प्रचार-प्रसार के बल पर लोगों को गुमराह न कर सकें। यद्यपि इस विषय में कानूनों की कमी नही है, परंतु व्यवहार में इनका पालन नहीं किया जाता। बड़े-बड़े धनी लोग अपने धन-बल पर प्रचार-तंत्र, प्रशासन, पुलिस और प्रभावी लोगों को खरीद लेते हैं। कहीं-कहीं गुंडागर्दी का साम्राज्य होता है। वहाँ किसी कुख्यात गुंडे के सामने कोई चुनाव में खड़ा नहीं होता। यदि कोई साहस करे तो उसकी हत्या करवा दी जाती है। ऐसी स्थिति पर चुनाव-आयोग की कड़ी निगाह होनी चाहिए। सौभाग्य से चुनाव-आयोग इस दिशा में जागरूक है। परंतु अभी और काम किया जाना बाकी है।

आजकल देखने में यह आता है कि विभिन्न दल अपने चुनाव-प्रचार में फिल्मी हस्तियों और क्रिकेट सितारों को बुला लेते हैं। इस बहाने लोगों की भीड़ जमा हो जाती है। वास्तव में इन मेहमान कलाकारों को चुनावों से कोई लेना-देना नहीं होता। ये मदारी की डुगडुगी का काम करते हैं। ऐसे कामों से लोकतंत्र में भटकाव आता है। लोग लुभावनी और कच्ची बातों के झाँसे में आकर अपना कीमती मत बेकार कर बैठते हैं।

भारत के चुनावी-परिदृश्य का एक घिनौना रूप भी है। चुनावी सभाओं में नेताओं के चमचे और बड़बोले वक्ता अपने विरोधियों के बारे में अभद्र भाषा का प्रयोग करते हैं। वे खुलकर एक-दूसरे पर लांछन लगाते हैं तथा उनका चरित्र-हनन करते हैं। यह चिंताजनक बात है।

वास्तव में चुनाव का स्वस्थ रूप है- शांतिपूर्वक प्रचार करना। मतदाताओं के सामने अपनी कार्य-योजना रखना, न कि विरोधियों को उखाड़ना। इसके लिए इलेक्ट्रॉनिक मीडिया सबसे सशक्त माध्यम है। इसके सहारे पूरे परिवार के सदस्य चुनावी-चर्चा में सम्मिलित हो सकते हैं। **[6]**

(ग) पर्यटन का महत्व

सैर कर दुनिया की गाफिल, जिंदगानी फिर कहाँ?
जिंदगानी गर रही तो, नौजवानी फिर कहाँ?

जीवन का असली आनंद घुमक्कड़ी में है, मस्ती और मौज में है। प्रकृति के सौंदर्य का रसपान अपनी आँखों से उसके सामने उसकी गोद में बैठकर ही किया जा सकता है। उसके लिए आवश्यक है- पर्यटन।

पर्यटन का अर्थ है- घूमना। बस घूमने के लिए घूमना। आनंद-प्राप्ति और जिज्ञासा-पूर्ति के लिए घूमना। ऐसे पर्यटन में सुख ही सुख है। ऐसा पर्यटन दैनंदिक जीवन की भारी-भरकम चिंताओं से दूर होता है। जो व्यक्ति इस दशा में जितनी देर रहता है, उतनी देर तक वह आनंदमय जीवन जीता है। इसका दूसरा लाभ है- देश-विदेश की जानकारी। इससे हमारा ज्ञान समृद्ध होता है। पुस्तकीय ज्ञान उतना प्रभावी नहीं होता जितना कि प्रत्यक्ष ज्ञान। पर्यटन से हमें देश-विदेश के खान-पान, रहन-सहन तथा सभ्यता-संस्कृति की जानकारी मिलती है। इससे हमारे मन में बैठे हुए कुछ अंधविश्वास टूटते हैं। हमें यह विश्वास होता है कि विश्व-भर का मानव मूल रूप से एक है। हमारी आपसी दूरियाँ. कम होती हैं। मन उदार बनता है। पूरा देश और विश्व अपना-सा प्रतीत होता है। राष्ट्रीय एकता बढ़ाने में पर्यटन का बहुत बड़ा योगदान है।

वर्तमान समय में पर्यटन एक उद्योग का रूप धारण कर चुका है। हिमाचल प्रदेश, जम्मू-कश्मीर आदि पर्वतीय स्थलों की अर्थ-व्यवस्था पर्यटन पर आधारित है। वहाँ वर्षभर विश्व-भर से पर्यटक आते हैं और अपनी कमाई खर्च करते हैं। इससे ये पर्यटक-स्थल फलते-फूलते हैं। वहाँ के लोगों को आजीविका का साधन मिलता है।

पर्यटन-स्थल अनेक प्रकार के हैं। कुछ स्थल प्राकृतिक सौंदर्य के लिए विख्यात हैं; जैसे- प्रसिद्ध पर्वत-चोटियाँ, समुद्र-तल, वन-उपवन। कुछ पर्यटन स्थल धार्मिक महत्व के हैं; जैसे हरिद्वार, वैष्णों देवी, काबा, कर्बला आदि। कुछ पर्यटन स्थल ऐतिहासिक महत्व के हैं; जैसे- लाल किला, ताजमहल आदि। कुछ पर्यटन स्थल वैज्ञानिक, सांस्कृतिक या अन्य महत्व रखते हैं। इनमें से प्राकृतिक सौंदर्य तथा धार्मिक महत्व के पर्यटन स्थलों पर सर्वाधिक भीड़ रहती है। **[6]**

13. सेवा में,

प्रधानाचार्य,

दिल्ली पब्लिक स्कूल

शाहगंज, आगरा।

विषय- सर्वशिक्षा अभियान के प्रोत्साहन हेतु

महोदय,

सविनय निवेदन है कि सर्वशिक्षा अभियान के प्रोत्साहन हेतु विद्यालय में रात्रिकालीन शिक्षा केंद्र का संचालन करना चाहता हूँ। मैंने अपने प्रयास से प्रौढ़ों को शिक्षित करने के उद्देश्य से अपने विद्यालय के कुछ अन्य छात्रों को भी सहयोग के लिए चुना है। आशा है आप मुझे उपर्युक्त कार्य के लिए विद्यालय का एक कमरा सायं 7 बजे से 9 बजे तक के लिए नि:शुल्क प्रदान करने की कृपा करेंगे। साथ ही चौकीदार को भी इस संबंध में निर्देश दें ताकि समय पर वह विद्यालय के कमरे को खोले व बंद कर सकें।

प्रार्थी

अ. ब. स.

कक्षा- दसवीं (ब)

दिनांक- ..... **[5]**

अथवा

सेवा में,

संपादक महोदय,

नवभारत टाइम्स,

नई दिल्ली।

विषय- बढ़ती मँहगाई पर सरकार का ध्यान आकर्षित करना।

मान्यवर,

मैं आपके लोकप्रिय व प्रतिष्ठित पत्र के माध्यम से बढ़ती मँहगाई की ओर सरकार का ध्यान आकर्षित करना चाहता हूँ। आशा है आप हमारी आवाज़ को समाचार-पत्र में छापकर सरकार तक पहुँचाने की कृपा करेंगे। आजकल दिन-प्रतिदिन खाद्य-पदार्थों के मूल्यों में वृद्धि होती जा रही है, उसे रोकने के लिए अधिकारीगण कोई ध्यान नहीं दे रहे हैं। बेचारी जनता हाथ-पर-हाथ रखे बैठी रह जाती है, वह अपने को लाचार महसूस कर रही है। इस बढ़ती हुई मँहगाई से चारों ओर त्राहि-त्राहि मच रही है, सरकार भी खामोश है, विरोध पक्ष की आवाज़ को भी वह दबाए बैठी है। ऐसी स्थिति में आप हमारी कठिनाई को ध्यान में रखते हुए सरकार तक हमारी आवाज़ पहुँचाने की कृपा करें। मैं आपका अत्यंत आभारी रहूँगा।

भवदीय

तनमय सिंघल

पॉकेट एफ- 29, सेक्टर - 8

रोहिणी, दिल्ली

दिनांक- .....

14.

'स्वरचित कविता प्रतियोगिता'

विषय- 'बाल श्रम'

सूचना

दिनांक- 5 नवंबर .....

दिनांक 14 नवंबर 20×× को विद्यालय सभागार में 'बाल श्रम' विषय पर 'स्वरचित कविता प्रतियोगिता' का आयोजन किया जाएगा। इच्छुक अभ्यर्थी हिंदी अध्यापिका डॉ. सुरभि गोयल से संपर्क करें। नाम लिखवाने की अंतिम तिथि 12 नवंबर है।

आज्ञा से

डॉ. के. के. श्रीवास्तव

प्रधानाचार्य

[5]

अथवा

केंद्रीय विद्यालय न0 1, अजीत नगर,

खेरिया हवाई अड्डा, आगरा

सूचना

दिनांक- 18 अप्रैल 20 ....

सभी विद्यार्थियों को सूचित किया जाता है कि विद्यालय में 20 अप्रैल 20.... को स्वैच्छिक रक्तदान शिविर का आयोजन किया जा रहा है। 10 वीं कक्षा व उससे ऊपर की कक्षाओं के विद्यार्थियों से अनुरोध है कि वे अधिक से अधिक संख्या में स्वैच्छिक रक्तदान कर समाज के प्रति अपने कर्तव्यों को निभाएँ।

डॉ. सुमित शर्मा

(प्रधानाचार्य)

15. **दो मित्रों के बीच संवाद**

सौरभ – अरे मित्र सोहन! इतने परेशान क्यों दिखाई दे रहे हो?

सोहन – क्या बताऊँ मित्र सौरभ! मेरे चाचा जी की तबीयत बहुत खराब है और वह अस्पताल में भर्ती हैं।

सौरभ – क्या हुआ उन्हें?

सोहन – अत्यधिक धूम्रपान करने के कारण उन्हें दमा के साथ-साथ फेफड़ों में भी संक्रमण हो गया है।

सौरभ – यह तो बहुत बुरा हुआ, मित्र धूम्रपान अत्यधिक हानिकारक है। इससे अनेक रोग हो जाते हैं कभी-कभी मृत्यु भी हो जाती है।

सोहन – हाँ मित्र, धूम्रपान के पैकेटों पर चेतावनी होने के बावजूद लोग इन्हें खरीदते हैं और साथ ही अपने लिए बीमारी भी खरीदते हैं।

सौरभ – हाँ और अपने पीछे परिवार को रोता हुआ भी छोड़ जाते हैं।

सोहन – ठीक कहा मित्र।

सौरभ – धूम्रपान को निषेध करके व लोगों में जागरूकता पैदा करके ही इसे रोका जा सकता है। **[5]**

अथवा

दो मित्रों के बीच संवाद

अरविंद – दीपक! आज का समाचार पत्र पढ़ा तुमने?

दीपक – हाँ मित्र! बाढ़ के कारण गाँव वालों का बुरा हाल हो गया है। सारी फसलें नष्ट हो गई हैं। गाँववासी बेघर हो गए हैं। प्रशासन द्वारा उन्हें फिर से बसाने का प्रयास किया जा रहा है।

अरविंद – मित्र! मेरा मन तो कह रहा है कि हमें भी कुछ मदद करनी चाहिए।

दीपक – मित्र! पर हमारे पास कुछ साधन भी तो नहीं हैं।

अरविंद – मित्र हम बाढ़ पीड़ितों की मदद करने के लिए लोगों से माँगकर कुछ साधन तो जुटा ही सकते हैं।

दीपक – मित्र, तो फिर चलें।

अरविंद – नेकी और पूछ-पूछ! चलो मैं तैयार हूँ।

दीपक – ठीक है, चलो जल्दी चलते हैं।

16.

देवभूमि उत्तराखंड के स्वच्छ और स्वस्थ्य वातावरण में आपका स्वागत है।

उत्तराखंड राज्य पर्यटन विभाग की ओर से

आप सबका उत्तराखंड भ्रमण पर हार्दिक स्वागत है।

हरियाली यहाँ अपार है,
बर्फ का अंबार है।
देवों की महिमा अपार है,
प्रकृति लुटाती प्यार है।
संपर्क करें- 05112244.....

[5]

अथवा

श्याम पुस्तक भंडार

छत्ता बाजार, मथुरा - 201001

खुशखबरी, खुशखबरी **खुशखबरी, खुशखबरी**

सी.बी.एस.ई., आई सी.एस.सी., यू.पी. बोर्ड, एन.सी.ई.आर.टी. तथा विश्वविद्यालयों से संबंधित

पाठय-पुस्तकें मिलने का एक मात्र स्थान।

विशेष ऑफर-किसी भी कक्षा की पाठयपुस्तकों के साथ

कॉपियाँ खरीदने पर कापियों की कीमतों में 30% की छूट! शीघ्र करें स्टॉक सीमित है।

मो. नं. - 94082341XXX

● ●

हिंदी 'ब'

प्रतिदर्श प्रश्न-पत्र 11

उत्तरमाला

सी.बी.एस.ई, कक्षा X

खंड 'क' अपठित बोध

10 अंक

1. (क)
- भावों के विशेष संगठन पर लोकरंजन की व्यवस्था का ढाँचा आधारित है।
- धर्म, राज और मत-शासन में उसका उपयोग किया गया है। **(सी.बी.एस.ई. अंक योजना, 2015) [2]**

व्याख्यात्मक हल: लोकरंजन की व्यवस्था का ढाँचा भावों के विशेष संगठन पर आधारित है। लोकरंजन व्यवस्था का उपयोग धर्म, राज और मत-शासन में किया गया है।

(ख)
- राजशासन ने।
- इसलिए दिखाया है ताकि लोगों द्वारा उनके अन्याय और अत्याचार का विरोध न हो।

(सी.बी.एस.ई. अंक योजना, 2015) [2]

व्याख्यात्मक हल: दंड का भय और अनुग्रह का लोभ राजशासन ने दिखाया क्योंकि लोगों द्वारा अन्याय और अत्याचार का विरोध न हो सकें

(ग)
- अपने स्वरूप वैचित्र्य की रक्षा के लिए।
- प्रभाव की प्रतिष्ठा बनाए रखने के लिए। **(सी.बी.एस.ई. अंक योजना, 2015) [2]**

व्याख्यात्मक हल: धर्म प्रवर्तकों ने स्वर्ग नरक का भय अपने स्वरूप वैचित्र्य की रक्षा के लिए तथा अपने प्रभाव की प्रतिष्ठा को बनाए रखने के लिए दिखाया।

(घ)
- बाह्य आडंबर जैसे- मूर्ति पूजा करना, रुद्राक्ष धारण करना, भस्म लगाना आदि।
- कोई इनका विरोध करता है तो कोई इनका समर्थन। **(सी.बी.एस.ई. अंक योजना, 2015) [2]**

व्याख्यात्मक हल: संप्रदायों, जातियों की भिन्नता बाह्य आडंबर जैसे- मूर्ति पूजा करना, रुद्राक्ष धारण करना तथा भस्म लगाना आदि जैसे रूपों में दिखाई देती है; कोई इनका विरोध करता है तो कोई इनका समर्थन।

(ङ)
- अपनी रक्षा और स्वार्थ-सिद्धि के लिए। **(सी.बी.एस.ई. अंक योजना, 2015) [1]**

व्याख्यात्मक हल: शासन व्यवस्था अपनी रक्षा और स्वार्थ सिद्धि के लिए भय और लालच का सहारा लेती है।

(च) मत-प्रवर्तक अपने द्वेष और संकुचित विचारों के प्रचार के लिए लोगों को डराते हैं। **[1]**

खंड 'ख' व्यावहारिक व्याकरण 16 अंक

2. पद [1]

3. (क) मिश्र वाक्य [1]

(ख) शिक्षक आए और वहाँ सन्नाटा छा गया। [1]

(ग) जो व्यक्ति लाल कमीज़ पहनकर आया है, वह मेरा पड़ोसी है। [1]

(सी.बी.एस.ई. अंक योजना, 2016)

4. (क) **(i)** कर्म का फल - तत्पुरुष समास [1]

(ii) हिसाब और किताब - द्वंदव समास [1]

(ख) **(i)** मटमैला - कर्मधारय समास [1]

(ii) हस्तनिर्मित - तत्पुरुष समास [1]

(सी.बी.एस.ई. अंक योजना, 2016)

5. (क) मुझे फलों का रस नहीं पीना। [1]

(ख) कृपया आप यहाँ से जाएँ / आप यहाँ से जाने की कृपा करें। [1]

(ग) हमारे घर में आज बहुत-से मेहमान आए हैं। [1]

(घ) उसे बैंक से रुपए निकालने चाहिए। [1]

(सी.बी.एस.ई. अंक योजना, 2016)

6. सिर मारना - मेरे पास बहुत काम है तुम कहीं और जाकर सिर मारो। [1]

मुट्ठी गरम करना - आजकल तो सरकारी दफ़्तर में मुट्ठी गरम किए बिना कुछ भी नहीं होता। [1]

तूती बोलना - इंजीनियर साहब इतने प्रभावशाली है कि सारे विभाग मे उनकी तूती बोलती है। [1]

आकाश से तारे तोड़ना - (बहुत कठिन काम करना) सरकारी अफसरों से काम कराना तो आजकल आकाश से तारे तोड़ लेने जैसा है [1]

खंड 'ग' पाठ्यपुस्तक तथा पूरक पाठ्यपुस्तक 28 अंक

7. (क) बड़े भाई साहब उपदेश की कला में माहिर थे, पर छोटा भाई मेहनत से घबराता था क्योंकि छोटा भाई मस्तमौला था, उसे सैर-सपाटा, गप्पें करना तथा मटरगश्ती करने में आनंद आता था, उसे खेलों का शौक था। [2]

(ख) पुलिस कमिश्नर के नोटिस के अनुसार अमुक-अमुक धारा के अनुसार कोई सभा नहीं हो सकती और कौसिल के नोटिस के अनुसार मोनुमेंट के नीचे ठीक चार बजकर चौबीस मिनट पर झंडा फहराया जाएगा तथा स्वतंत्रता की प्रतिज्ञा पढ़ी जाएगी, सर्वसाधारण की उपस्थिति होनी चाहिए। अर्थात कमिश्नर के अनुसार सभा नहीं हो सकती और कौंसिल के अनुसार सभा होनी थी। [2]

(ग) प्रकृति में आए असंतुलन का परिणाम यह हुआ कि अब गरमी में अधिक गरमी पड़ने लगी, बेवक्त की बरसात होने लगी, जलजले और तूफान उठने लगे हैं, साथ ही साथ नित नए रोग उत्पन्न होने लगे हैं। [2]

(घ) चाय पीने के बाद लेखक ने स्वयं में यह परिवर्तन महसूस किया कि उसके दिमाग की रफ्तार धीरे-धीरे धीमी पड़ती जा रही है और उसे ऐसा महसूस हुआ कि वह मानो अनंत काल में जी रहा है। उसे सन्नाटा भी सुनाई देने लगा। [2]

8. 'शुद्ध सोने में ..... में सोना' गांधी जी के आदर्श और व्यवहार के संदर्भ में यह बात झलकती है। लोग गांधी जी को व्यावहारिक और आदर्शवादी मानते थे। इसीलिए वे अपने विलक्षण आदर्श चला सके, उनके व्यवहार और आदर्शों से प्रभावित होकर देशवासी उनके पीछे-पीछे चल पड़े। उनके आग्रह पर स्वदेशी स्वाधीनतावाद को स्वीकार कार्य कर सके। गांधी जी ने आदर्शों को व्यावहारिकता के स्तर पर उतरने नहीं

दिया बल्कि व्यावहारिकता को आदर्शों के स्तर पर चढ़ाया था। वे सोने में ताँबा नहीं ताँबे में सोना मिलाकर उसकी कीमत बढ़ाते थे। गांधी जी ने आज़ादी की लड़ाई में साधारण व्यक्तियों को जोड़कर उनकी कीमत व प्रसिद्धि बढ़ाई, चाहे वे कृषक पुत्र राजेंद्र प्रसाद हों या सरदार पटेल या जवाहरलाल नेहरू हों, गांधी जी के व्यक्तित्व, सिद्धांतों से प्रभावित होकर ही लोग उनके निकट आए। **[5]**

अथवा

बहुत से लोग घायल हुए, लॉकअप में रखे गए, स्त्रियाँ जेल गईं फिर भी इस दिन को अपूर्व इसलिए कहा गया है क्योंकि इस दिन बहुत अधिक लोगों ने स्वतंत्रता दिवस मनाया था। लोगों ने अपने-अपने नेताओं के संरक्षण में झंडारोहण करके विशाल सभाएँ कीं और जुलूस निकाले थे तथा ब्रिटिश सरकार के बनाए कानून को तोड़ने के अपराध से युवाओं, पुरुषों व स्त्रियों को पुलिस का कोप भाजन बनना पड़ा था तथा महिलाओं को जेल भी जाना पड़ा था। इसलिए यह दिन अपूर्व है। इस दिन लगभग 200 कार्यकर्ता घायल हुए थे और बंदी बनाए गए थे। आज जो कुछ भी हुआ वह अपूर्व हुआ। बंगाल के नाम या कलकत्ता के नाम पर कलंक था कि यहाँ कोई काम नहीं हो रहा है, आज वह कलंक काफी हद तक धुल गया था।

9. (क) उक्त पंक्ति के द्वारा कवि यह कहना चाहता है कि जिस व्यक्ति ने प्रेम के एक अक्षर को पढ़ लिया है, वह पंडित अर्थात विद्वान (ज्ञानी) हो जाता है अर्थात जिस व्यक्ति ने प्रेम का व्यावहारिक अनुभव (ज्ञान) प्राप्त कर लिया है वही इस जगत (संसार) में सर्वाधिक विद्वान है। **[2]**

(ख) विरासत में मिली चीजों की सुरक्षा बड़ी संभालकर इसलिए होती है, क्योंकि वह हमें अपने पूर्वजों से प्राप्त होती हैं, उन चीजों का अपना महत्व और इतिहास होता है। जैसे 1857 की तोप जो कि कंपनी बाग के प्रवेश द्वार पर स्थित है। यह तोप हमें अंग्रेजों द्वारा सौंपी गई थी, जिसकी सँभाल आज भी की जाती है। **[2]**

(ग) व्यक्ति को निडर होकर मनुष्यता के गुणों व भावों से युक्त होकर, महापुरुषों के जीवन से प्रेरणा लेकर अभिमान रहित उदार, परोपकारी व्यक्ति के समान, सभी मनुष्यों को अपना बंधु मानते हुए जीवन व्यतीत करना चाहिए। **[2]**

(घ) गीत में भावना की सच्चाई, मार्मिकता और गेयता जैसे गुण होते हैं - जिनके कारण कोई भी गीत सदा-सदा के लिए याद रह जाते हैं - 'कर चले हम फिदा' नामक गीत भी बलिदान भावना की मार्मिकता से ओतप्रोत हैं इसमें लय और संगीत का भी मेल है इस लिए यह गीत भुलाए नहीं भूलता। **[2]**

10. मीरा भगवान कृष्ण की भक्त थीं। वे कृष्ण को अपना प्रियतम, पति और रक्षक मानती थीं। पठित पाठ के पदों में उन्होंने उनके दो रूपों- रक्षक रूप तथा रसिक रूप की आराधना करते हुए प्रभु से अपनी रक्षा करने की गुहार की है। वे स्वयं को श्री कृष्ण की दासी बताते हुए कहती हैं- 'दासी मीरा लाल गिरधर, हरो म्हारी पीर'।

वे स्वयं को कृष्ण का अपनाजन ही कहती हैं तथा उनकी चाकरी करने तो तैयार हैं। वे उनके महल में रहकर उनके विहार के लिए बाग लगाने को भी तैयार हैं। वे वृंदावन की गली-गली में घूमकर कृष्ण का गुणगान करना चाहती हैं।

दूसरे पद में वे कृष्ण के सुंदर छबीले रूप की आराधना करती हैं और उनके मुरलीधर रूप का स्मरण करती हैं। वे स्वयं लाल साड़ी पहनकर उनसे मिलना चाहती हैं और यमुना तट की याद कराकर प्रेम के बंधन में बाँध लेना चाहती हैं। **[5]**

अथवा

'मनुष्यता' कविता के माध्यम से कवि मैथलीशरण गुप्त ने मानवता, एकता, सहानुभूति, सद्भाव, उदारता और करुणा का संदेश दिया है। वे मनुष्य को स्वार्थ, भिन्नता, वर्गवाद, जातिवाद आदि संकीर्णताओं से मुक्त करना चाहते हैं। वे मनुष्य में उदारता के भाव को भरना चाहते हैं। कवि चाहते हैं कि हर मनुष्य समस्त संसार में अपनत्व की अनुभूति करे। वह दुखियों, वंचितों और जरूरतमंदों के लिए बड़े से बड़ा त्याग करने को भी तैयार हो। वह कर्ण, दधीचि, रंतिदेव आदि के अतुल त्याग से प्रेरणा ले। वह अपने मन में करुणा का भाव जगाए। वह अभिमान, लालच और अधीरता का त्याग करे। एक-दूसरे का सहयोग करके देवत्य को प्राप्त करे। वह हँसता-खेलता जीवन जिए तथा आपसी मेल-बढ़ाने का प्रयास करे। उसे किसी भी सूरत में अलगाव और भिन्नता को हवा नहीं देनी चाहिए।

11. (क) हरिहर काका ने अंत में अपनी ज़मीन किसी को न देने का निर्णय लिया उनके इस निर्णय से उनके भाइयों का व्यवहार हरिहर काका के प्रति पूरी तरह से बदल गया। उन्होंने काका को महंत से भी अधिक यातनाएँ देना शुरू कर दीं और कहने लगे कि जमीन हमारे नाम कर दो नहीं तो मार कर घर में गाड़ देंगे। उनका निर्णय रिश्तों में छिपी स्वार्थ और धनलोलुपता की भावना को दर्शाता है। हमारे अपने भी स्वार्थ और लोभ-लालच में आकर अपने ही भाई-बंधु की जान के पीछे पड़ जाते हैं। उसके अपने ही परिवार के सदस्य उसकी मृत्यु की प्रतीक्षा करने लगते हैं। हरिहर काका की यह स्थिति समाज के हर बुजुर्ग को यह संदेश देती है कि कभी भी अपने जीते जी अपनी संपत्ति किसी को नहीं सौंपनी चाहिए अन्यथा उनका जीवन जीते जी नरक के समान हो जाएगा और यदि फिर भी परिवार के सदस्य बुरा व्यवहार करें तो कानून की मदद लेनी चाहिए। **[3]**

(ख) पी. टी. सर की तीन चारित्रिक विशेषताएँ इस प्रकार हैं-

(i) स्वाभिमानी अध्यापक- पी.टी. मास्टर का सिद्धांत है कि लड़कों को डाँट-डपटकर रखा जाए। उसकी सोच गलत हो सकती है। परंतु अपनी नज़रों में वह ठीक है। इसलिए चौथी कक्षा के बच्चों को मुर्गा बनाकर कष्ट देना उसे अनुचित नहीं लगता। अत: जब हैड मास्टर उसे कठोर दंड देने पर मुअत्तल कर देते हैं तो वह गिड़गिड़ाने नहीं जाता।

(ii) कठोर अध्यापक- पी.टी. मास्टर बहुत कठोर थे। वह छात्रों को अनुशासन में लाने के लिए बहुत कठोर और क्रूर दंड दिया करते थे। छात्रों को घुड़की देना, ठुड्डे मारना, उन पर बाघ की तरह झपटना, उनकी खाल खींचना उनके लिए बाएँ हाथ का खेल था। उन्हें यह सहन नहीं था कि कोई भी बच्चा कतार से बाहर हो या टेढ़ा खड़ा हो या अपनी पिंडली खुजलाए। वह ऐसे बच्चों को समझाने की बजाय कठोर दंड दिया करते थे।

(iii) अयोग्य व असफल अध्यापक- पी.टी. मास्टर जब फारसी पढ़ाने लगते थे तो और भी क्रूर हो उठते थे। वह बच्चों को समझाने की बजाय डंडे से काम कराना चाहते थे। वह चाहते थे कि बच्चे भय के मारे पाठ याद कर लें। जिस पाठ को कक्षा का एक भी बच्चा याद न कर पाए, वह पाठ जरूर या तो कठिन होगा या छात्र अधिक योग्य न होंगे। दोनों ही स्थितियों में मास्टर का पीटना बेतुका काम था। ऐसा व्यक्ति खच्चर तो हाँक सकता है, छात्रों को नहीं पढ़ा सकता। **[3]**

खंड 'घ' लेखन **26 अंक**

12. (क) नर हो, न निराश करो मन को

'नर हो, न निराश करो मन को' यह सूक्ति मैथिलीशरण गुप्त की है। गुप्त जी का कहना है कि मनुष्य को कभी निराश नहीं होना चाहिए। व्यक्ति को विपरीत परिस्थितियों में भी हिम्मत कभी नहीं हारनी चाहिए। यदि मनुष्य ठान ले तो इस संसार में कुछ भी असंभव नहीं है। हमें हमेशा अपने लक्ष्य की प्राप्ति के लिए प्रयत्नशील रहना चाहिए। मन में कभी भी निराशा को जगह नहीं देनी चाहिए। आप सभी जानते हैं कि महाराणा प्रताप एवं रानी लक्ष्मीबाई ने अंतिम क्षण तक हार स्वीकार नहीं की थी।

मनुष्य की समस्त इंद्रियों का संचालक मन ही है। मन के कहने पर ही इंद्रियाँ सक्रिय होती हैं। मन के द्वारा ही मनुष्य साधनहीन होने पर भी हार को जीत में बदल सकता है। पर यदि मन में दुर्बलता हो तो सभी साधनों के होते हुए भी मनुष्य पराजय का मुख देखता है। इसलिए कभी भी निराशा को अपने पास नहीं फटकने देना चाहिए। इसीलिए कहा जाता है कि हर रात के बाद सुबह होती है। सभी विद्वानों एवं ऋषि मुनियों द्वारा मन को संयमी एवं बलवान बनाने पर बल दिया है। संयम के द्वारा बलवान मन ही दृढ़ संकल्प ले सकता है। निराशा में डूबा मनुष्य कोई भी निर्णय ले सकता है। यदि एक बार मनुष्य लक्ष्य प्राप्त नहीं कर सका तो उसे अपना प्रयत्न जारी रखना चाहिए। जीवन सफलता-असफलता, लाभ-हानि, जय-पराजय का ही दूसरा रूप है। भगवान राम ने वनवासी जीवन व्यतीत करते हुए भी लंका के बलशाली राजा रावण को हराया। हनुमान ने एक ही छलांग में समुद्र को लाँघ लिया था। नैपोलियन ने कहा था कि ''असंभव शब्द मूर्खों के शब्दकोश में होता है।''

इतिहास यह सिद्ध करता है कि जब-जब मनुष्य ने निराशा का दामन थामा है तब-तब प्रगति एवं विकास का रथ थम गया है। इसलिए हमेशा अपने लक्ष्य के प्रति आशावान होना चाहिए। मनुष्य के लिए कुछ भी असंभव नहीं है। **[6]**

(ख) मोबाइल फोन

मोबाइल फोन वर्तमान समय में अत्यावश्यक हो गया है। आज हर बच्चे, बूढ़े, युवक की यह अनिवार्य जरूरत बन चुका है। आप कहाँ गए हैं, किसी मुसीबत में तो नहीं हैं तथा आपकी क्या जरूरत है-मोबाइल फोन के माध्यम से पलक झपकते इन सब बातों की जानकारी प्राप्त हो जाती है। सच तो यह है कि मोबाइल जेब में होने से आप सारी दुनिया से जुड़े रहते हैं।

वर्तमान युग सूचना और संचार का युग है जिसमें मोबाइल के बिना काम नहीं चल सकता। मोबाइल में केवल फोन की सुविधा नहीं है। अपितु अब तो स्मार्ट फोन में और भी तमाम सुविधाएँ है। इंटरनेट की सुविधा भी अब मोबाइल पर उपलब्ध है, सोशल मीडिया-फेसबुक, ट्विटर, आदि के साथ आप अपने विचार दूसरों तक पहुँचा सकते हैं। कंप्यूटर पर जो सुविधाएँ उपलब्ध हैं वे अब मोबाइल पर भी उपलब्ध हैं। नेट बैंकिंग, ई-कॉमर्स, ई-रिजर्वेशन जैसी तमाम उपयोगी सेवाएँ अब मोबाइल पर मिल जाती है।

मनोरंजन का भी यह प्रमुख साधन है। अनेक प्रकार के गेम्स मोबाइल पर उपलब्ध हैं। एफ.एम.रेडियो के साथ-साथ संगीत का आनंद भी मोबाइल से ले सकते हैं। इसमें कैमरा, घड़ी, टार्च की सुविधाएँ भी हैं। सच तो यह है कि मोबाइल के चलन से अब लोगों ने घड़ी बाँधना बंद कर दिया है।

किंतु यह भी सच है कि आज युवा पीढ़ी मोबाइल का दुरुपयोग अधिक कर रही है। गंदी पिक्चरें देखना, अपनी सहपाठियों के फोटो एवं गंदी तस्वीरें दोस्तों को भेजना, एस.एम.एस. की सुविधा करना आदि आज युवाओं का चलन बन गया है।

इसके अतिरिक्त इसके अत्याधिक प्रयोग से कई तरह की बीमारियाँ होने का खतरा रहता है इसलिए हम सभी को ध्यान रखना होगा कि हमें इसके प्रयोग की एक सीमा तय करनी होगी तभी-इस छोटे-से प्यारे यंत्र का हम लाभ उठा सकेंगे और यह हम सभी के लिए लाभकारी बन सकेगा। **[6]**

(ग) एक ठंडी सुबह

पिछले वर्ष 25 दिसंबर का दिन था। प्रातः काल सात बजे सो कर उठते ही मैनें देखा कि मेरी रजाई ऊपर से एकदम ठंडी और नम सी थी। मैने उठकर खिड़की से बाहर देखा, तो पाया कि दूर-दूर तक कुछ भी नहीं दिखाई दे रहा था, चारों तरफ घना कुहरा छाया हुआ था। माँ के बहुत आग्रह करने पर में रजाई से बाहर निकला।

बिस्तर से निकलते ही मैने गरम कपड़े पहन लिए और नित्य कर्म से निवृत होकर मैं घर से बाहर सैर करने के लिए निकल पड़ा। बाहर आकर मैने देखा कि बड़ी ठंडी और बर्फीली हवा चल रही थी। घना कुहरा छाया हुआ था, आने-जाने वाली कारें और स्कूटर अपनी बत्तियाँ जलाए धीरे-धीरे चल रहे थे क्योंकि उन्हे भी कुछ नहीं दिखाई दे रहा था।

मैं टहलते-टहलते नहर की ओर निकल पड़ा, मेरे घर से केवल एक किलोमीटर की दूरी पर एक नहर है। नहर के दोनों किनारों पर बड़े-बड़े घने वृक्ष हैं। वहाँ दूर-दूर तक कोई दिखाई नहीं दे रहा था। इक्का-दुक्का लोग ही दिख रहे थे। मैंने देखा कि नहर के किनारे के पेड़ों के पत्तों और किनारे की घास पर पाला पड़ चुका था, चारों ओर निस्तब्धता छाई हुई थी। न तो किसी पक्षी की चहचहाहट सुनाई पड़ रही थी और न पानी की कल-कल। थोड़ी ही देर में मैंने अनुभव किया कि मेरी नाक ठंड से एकदम सुन्न हो गई थी, मैं ठंड से काँपने लगा। ठंड के कारण में अधिक देर तक वहाँ टिक न सका, इसलिए थोड़ी देर बाद ही मैं वापस लौट पड़ा। कुछ दूर चलने के पश्चात मुझे किसी के कराहने की आवाज पास की एक झोपड़ी के भीतर से सुनाई दी, मैंने रुककर झोपड़ी के अंदर झाँक कर देखा, वहाँ एक वृद्ध अकेले व्यक्ति को कराहते हुए देखा, जो कि पास के मंदिर की सीढ़ियों पर भीख माँगता था। पिछली रात की ठंड से वह बेहोश हो

गया था, मैंने बाहर निकलकर कुछ टहनियाँ और कागज एकत्र किए और झोपड़ी के एक-एक कोने में आग जला कर धीरे-धीरे उस वृद्ध के हाथ-पाँव मलने लगा।

कुछ देर में गर्मी पाकर उसे होश आने लगा, जब उसे होश आया तो उसने मुझे बड़ी दुआएँ दीं। नेक काम करके मेरा हृदय भी बड़ा प्रफुल्लित था।

घर आते-आते नौ बज गए थे, कुहरा धीरे-धीरे छँटने लगा था, सूरज की किरणें लुकाछिपी सी कर रही थीं। घर में घुसते ही मेरे कानों में हँसी के ठहाके गूँज उठे-अंदर आकर देखा कि मेरे पापा के कुछ मित्र घर पर आए हुए थे और वहाँ गर्मा-गर्म चाय व पकौड़ों का दौर चल रहा था। मैंने भी उनका आनंद लिया।

शाम को मैं पुनः घर से बाहर निकला। मेरे कुछ दोस्त हिमपात देखने हेतु शिमला जाने का कार्यक्रम बना रहे थे, उन्होंने मुझसे भी चलने को कहा, मैं हिमपात देखने को उत्सुक तो था लेकिन उसी समय मुझे उस गरीब भिखारी की याद आ गई जिसे मैंने सुबह ही मरने से बचाया था। मुझे कुछ भी अच्छा नहीं लग रहा था। मैंने शिमला जाने से इंकार कर दिया-मुझे झोपड़ी का दृश्य याद आ रहा था- मैं सोचने लगा कि सर्दियाँ अमीरों को खुशहाल बनाती हैं और गरीबों के प्राण तक हर लेती हैं। ठंड का मेरा सारा आनंद इन्ही विचारों में लुप्त हो गया। **[6]**

13. सेवा में,
अधीक्षक,
गोदावरी छात्रावास।
महोदय,

मैं आपका ध्यान छात्रावास के भोजनालय में परोसे जाने वाले भोजन की ओर दिलाना चाहती हूँ। पिछले एक माह से भोजन का स्तर निरंतर गिरता जा रहा है। रोटियाँ कच्ची या जली हुई मिलती हैं। चावल बहुत घटिया होते हैं। दालों में पानी और कंकड़ों की बहुतायत रहती है। सलाद तो नदारद ही हो गई है। पानी तक शुद्ध नहीं मिलता। सप्ताह में एक बार खीर मिलती है। उसे चूने का घोल कहना ठीक होगा। आप स्वयं भोजन के समय आकर निगरानी रखने की कृपा करें।

धन्यवाद!
भवदीय
अनुराधा
कक्षा- दसवीं
अनुक्रमांक- 517
दिनांक- 13 मार्च 20××

[5]

अथवा

सेवा में,
थानाध्यक्ष
रवींद्र नगर, आगरा।

विषय- 'गश्त बढ़ाने हेतु'

महोदय,

मैं रवींद्र नगर सुधार समिति के अध्यक्ष के नाते आपका ध्यान रोज बढ़ती चोरी और छीनाझपटी की घटनाओं की ओर दिलाना चाहता हूँ। पिछले एक माह से इस क्षेत्र में चोरी की चार वारदातें और छीनाझपटी की अनेक घटनाएँ हो चुकीं हैं। प्रशासन की ढिलाई से नगर की जनता परेशान है। अभी तक कोई भी चोर पकड़ा नहीं गया है। आपसे निवेदन है कि इस इलाके में पुलिस-कर्मचारियों की संख्या तथा उनकी गश्त बढ़ा दें। इससे भयभीत नागरिकों के मन में विश्वास बढ़ेगा तथा चोरों के कान खड़े होंगे। आशा है, आप शीघ्र कार्यवाही करेंगे।

धन्यवाद!
भवदीय
गर्व शर्मा

14.

केंद्रीय विद्यालय नंबर- 2, आगरा

सूचना **दिनांक- 15 फरवरी 20.....**

आप सभी को सूचित किया जाता है कि हमारे विद्यालय में 15 फरवरी, 20..... को प्रातः 8 बजे से 10 बजे तक विद्यालय परिसर के उद्यान में वृक्षारोपण का आयोजन किया जाएगा। सभी विद्यार्थियों से निवेदन है कि सभी अपनी-अपनी सहभागिता से कार्यक्रम को सफल बनाने में सहयोग करें।

वेदांत उपाध्याय

(संयोजक)

[5]

अथवा

आवश्यक सूचना

शहर की सभी क्रिकेट टीमों को सूचित किया जाता है कि 'खेल भारती संस्था' आपके शहर में रविवार दिनांक..... से डे-नाइट क्रिकेट मैच का आयोजन कर रही है। मैच में भाग लेने की इच्छुक टीमें (दल) रविवार दिनांक ..... से पूर्व अपना पंजीकरण अवश्य कराएँ। पंजीकरण करने का शुल्क ₹ 250 प्रतिदल निश्चित किया गया है।

आज्ञा से

सूचना प्रभारी

'खेल भारती संस्था'

15. **डॉक्टर एवं मरीज के बीच संवाद**

मरीज - डॉक्टर साहब, पिछले कुछ दिनों से मेरे पेट में रह-रहकर दर्द होता है, मैं इस कारण बहुत परेशान रहता हूँ।

डॉक्टर - आपके खाने-पीने के चुनाव व समय में तो कोई समस्या नहीं है।

मरीज - नहीं डॉक्टर साहब, पहले मुझे भी ऐसा ही लगा तो मैंने अत्यंत सादा भोजन व नियमित समय पर लेना प्रारंभ कर दिया, पर इसका कोई फायदा नहीं हुआ।

डॉक्टर - तब तो फिर अल्ट्रासाउंड कराना पड़ेगा, तभी स्थिति साफ होगी।

मरीज - डॉक्टर साहब कोई चिंता की बात है क्या?

डॉक्टर - नहीं-नहीं मुझे तो ऐसा नहीं लगता, पर सही स्थिति का पता तो अल्ट्रासाउंड के बाद ही लगेगा। यदि पथरी या अल्सर की समस्या हुई तो उसका सही इलाज भी हो जाएगा।

मरीज - ठीक है सर। धन्यवाद। **[5]**

अथवा

दो सामान्य व्यक्यिों के बीच संवाद

संजय - नफीस! तुम कैसे हो? कहीं जरूरी काम से जा रहे हो क्या?

नफीस - हाँ, संजय! राशन की दुकान से चीनी और गेंहू लाने जा रहा हूँ।

संजय - चीनी तो ठीक है, पर गेहूँ की क्वालिटी तो सरकारी राशन की दुकानों में अच्छी नहीं होती है।

नफीस - देखो भाई! जब खाने के ही लाले पड़े हों तो गुणवत्ता की बात न ही करें तो ज्यादा अच्छा है।

संजय - ठीक कहते हो मित्र, मैं तुम्हारी बात से सहमत हूँ।

नफीस - मित्र, यदि महँगाई थोड़ी बहुत हो तो उसे झेला भी जाए पर यहाँ तो सभी वस्तुओं के दाम आसमान छू रहे हैं, राशन की दुकान पर गेहूँ कुछ सस्ता मिलेगा तो रोटी तो खाने को मिलेगी।

संजय – तुम ठीक कहते हो नफीस! महँगाई के कारण तो आजकल लोगों के भूखों मरने की नौबत आ गई है।

16.

सूती वस्त्र की एकमात्र विश्वसनीय कंपनी 'पैरहन'
आपके व्यक्तित्व को दे नई पहचान।
सपनों को उड़ान

दिनांक-27 अप्रैल 2019- 30.4.19
स्थान-पालीवाल ओडिटोरियम
कंपनी बाग, फिरोजाबाद

आकर्षक कीमत
शीघ्र करें
30% की छूट
का लाभ उठाएँ।

[5]

अथवा

• •